भूमिका

किसी भी भाषा समुदाय में द्विभाषिकता और बहुभाषिकता का अस्तित्व देखा जा सकता है। दो या दो से अधिक भाषाओं के प्रयोग की क्षमता रखने वाला समाज अपने भाषा व्यव्हार में इनका मिला जुला रूप प्रयोग करने लगता है। इस प्रकार वह अपनी भाषा में दो या दो से अधिक 'कोड' के घटक मिश्रण करके बोलता है अथवा एक भाषा बोलते-बोलते अनायास दूसरी भाषा का कोड उसमे जोड़ कर अपनी बात पूरी करता है। इन दोनों प्रक्रियाओं को क्रमशः कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन कहा जाता है। दो संस्कृतियों का संपर्क जहाँ उसके निवासियों के खान–पान, रहन–सहन, तौर–तरीकों को प्रभावित करता है, वहीं उसकी भाषा भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। प्रत्येक भाषा की अपनी एक निश्चित एवं विशिष्ट सामाजिक संरचना होती है। अत: जब एक भाषा दूसरी भाषा से सीधे संपर्क स्थापित करती है तो उस भाषा की भिन्नतामूलक विशेषताएँ एवं अभिलक्षण भी उसे प्रभावित करते हैं। हो सकता है कि संपर्क की स्थिति में कोई भाषा पूरी तरह अपना महत्व न खोए, बल्कि उसके व्यवहार क्षेत्र संकुचित हो जाएँ।

वर्तमान समय में भाषा की स्थिति निरतंर भौगोलिक एवं सामाजिक गतिशीलता के कारण परिवर्तित हो रही है जिससे भाषाभाषी समुदायों में कोड मिश्रण, कोड परिवर्तन एवं बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न होना एक सामान्य तथ्य है। भाषा के अंतर्गत परिवर्तन की यह वास्तविकता भाषा को समृद्ध बनाने में सहायक होती है। ये भाषायी परिवर्तन विभिन्न भाषिक इकाइयों से घुलमिल जाते हैं जिससे एक अलग प्रकार के भाषा–व्यवहार का निर्माण होता है। इस भाषा–व्यवहार को कोड मिश्रण कहते हैं। कोड मिश्रण किसी एकभाषी अथवा बहुभाषी समाज के भाषिक व्यवहार का अभिन्न अंग कहा जा सकता है।

कोड मिश्रित भाषा रूप भाषा व्यवहार के समय वक्ता के मस्तिष्क से संदर्भित रूप से निकलते हैं। कोड मिश्रण समाज भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विभिन्न भाषाओं की इकाइयाँ एक ही भाषा के व्यवहार के समय आपस में मिश्रित होती रहती हैं। इसी स्थिति को कोड मिश्रण की संज्ञा दी जाती है। कोड मिश्रण होने की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य क्या है प्रस्तुत शोध में इसी प्रश्न का हल खोजने का प्रयास किया गया है।

शोध का उद्देश्य

भारत एक बहुभाषी देश है जहाँ एक साथ एक क्षेत्रफल में ,एक समुदाय के रूप में कई संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं। सभी आपस में विचार-विनिमय तथा संप्रेषण के लिए एक दूसर की भाषा की मदद लेते हैं। भारत की इस विभिन्नता में एकता भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाती है। अतः इसे विभिन्नता में कोड मिश्रण की प्रक्रिया स्वाभाविक है। कोड मिश्रण की यह प्रक्रिया केवल व्यक्ति व्यवहार तक ही सिमित नहीं है बल्कि साहित्य में भी इसका गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में कोड मिश्रण के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष इस अध्ययन के क्षेत्र हैं।

लघु शोध प्रबंध की रूपरेखा :-

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कुल चार अध्याय है जिनमे प्रमुख बिंदुओं को व्यवस्थित करते हुए निम्न प्रकार से समाविष्ट किया गया है :-

1. प्रथम अध्याय 'कोड की संकल्पना' है जिसमे कुल तीन उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक 'कोड का स्वरुप'में कोड के प्रकार्य ,प्रतीक विज्ञान तथा उसके सामाजिक संदर्भों का संक्षिप्त परिचय दिया है तथा भाषा के छः उपादानों के अधर पर भाषा के प्रकार्य बताये गये हैं। द्वितीय उपशीर्षक 'कोड की परिभाषा' में विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई कोड की परिभाषा को बताया गया है। तृतीय उपशीर्षक 'कोड और समाज का अंतःसंबंध' में समाज और कोड के संबंधो पर प्रकाश डाला गया है।

2. द्वितीय अध्याय 'कोड मिश्रण की अवधारणा' कोड मिश्रण कि अवधारणा को बताया गया है। इस अध्याय तीन उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक 'कोड मिश्रण का अर्थ एवं कोड मिश्रण के कारण' में कोड मिश्रण के अर्थ को तथा कोड मिश्रण होने के पीछे जो कारण है उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

द्वितीय उपशीर्षक 'द्विभाषिकता ,बहुभाषिकता तथा कोड मिश्रण' में द्विभाषिक स्थिति,बहुभाषिक स्थित और कोड मिश्रण की संकल्पना पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय उपशीर्षक 'कोड मिश्रण एवं कोड परिवर्तन में अंतर' में बहुभाषिकता से उत्पन्न दो संकल्पनाओं कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन में अंतर दर्शाया गया है।

3. तृतीय अध्याय 'कोड मिश्रण के स्तर' में तीन उपशीर्षक है। प्रथम उपशीर्षक 'शाब्दिक इकाईयों के आधार पर कोड मिश्रण' में शब्द के स्तर पर होने वाले कोड मिश्रण तथा कुछ मिश्रित कोडों के उदहारण दिए गये है। द्वितीय उपशीर्षक 'पदबंधीय स्तर पर कोड मिश्रण' में पदबंध के स्तर पर होने वाले कोड

मिश्रण के उदाहर दिए गये हैं। तृतीय उपशीर्षक 'उपवाक्य के स्तर पर कोड मिश्रण' में उपवाक्य के स्तर पर होने वाले कोड मिश्रण के कुछ उदाहरणों द्वारा कोड मिश्रण के विविध स्तरों का परिचय दिया गया है।

4. चतुर्थ अध्याय ' कोड मिश्रण और हिंदी कहानी : सामाजिक,मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य' में चार उपशीर्षक हैं । प्रथम उपशीर्षक 'कोड मिश्रण : साहित्य,समाज और मनोविज्ञान' में समाज , साहित्य तथा मनोविज्ञान का संबंध और उनके संदर्भ में कोड मिश्रण को दर्शाया गया है। द्वितीय उपशीर्षक ' कोड मिश्रण और हिंदी कहानी' में हिंदी कहानी और कोड मिश्रण के संदर्भ में समिश्रण के उदहारण प्रस्तुत किए गये हैं। तृतीय उपशीर्षक '21 वि. सदी की कहानियों में कोड मिश्रण के सामाजिक परिप्रेक्ष्य' में चयनित कहानियों के पत्रों की सामाजिक स्थिति के बारे में बताया गया है। चतुर्थ उपशीर्षक '21 वि. सदी की कहानियों के कथावस्तु में कोड मिश्रण के मनोवैज्ञानिक पक्ष' कहानी के घटना तथा विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

'उपसंहार' में प्रस्तुत शोधकार्य के महत्वपूर्ण पक्षों की संक्षिप्त विवेचना की गई है। साथ ही उपयोगिता एवं सीमाओं को रेखांकित करते हुए इस शोध से सम्बंधित संभावनाओं को स्थान दिया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध के अंत में 'संदर्भ ग्रन्थ सूची' के अंतर्गत भाषा,समाजभाषाविज्ञानऔर कोड मिश्रण से सम्बंधित उन पुस्तकों का उल्लेख किया गया है जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को करने हेतु सहायता ली गई है । तथा समाज, साहित्य और मनोविज्ञान की जानकारी के लिए भी कुछ पुस्तकों का सहारा लिया गया है। पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ वेबसाइटो का भी उल्लेख किया गया है जो शोध कार्य के लिए उपयोगी हैं।

साहित्य समीक्षा

कोड मिश्रण के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पर्प्रेक्ष्य को ले कर कोई काम मेरी जानकारी में कहीं नहीं हुआ है। कोड मिश्रण से संबंधी कुछ काम हुए भी हैं तो उनका परिप्रेक्ष्य अलग है। जैसे – ' चुनर शहर की हिंदी में कोड मिश्रण' (मा.गां.अं.हीं.विश्वविद्यालय) तथा 'पूर्वी दिल्ली की हिंदी में कोड-मिश्रण व कोड अंतरण : समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन' (दिल्ली विश्वविद्यालय) । येदोनों ही शोध कार्य क्षेत्र विशेष पर आधारित है। फिर भी इनसे मुझे बहुत सहायता प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्तप्रस्तुत शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए कई पुस्तकों की सहायता ली गई है जिनमे से कुछ प्रमुख पुस्तकों का विवरण निम्नांकित है –

- सिंह, डॉ.भरत.(2002). भाषा और समाज (हिंदी भाषा के समाजशास्त्रीय अध्ययन के संदर्भ में).दिल्ली : आलेख प्रकाशन

इस पुस्तक में भाषा और समाज से सम्बंधित कई पक्षों पर विचार किया गया है जैसे –भाषा के विविध रूप, बहुभाषिकता ,कोड मिश्रण और परिवर्तन आदि।

- श्रीवास्तव,रवीन्द्रनाथ.(1994). हिंदी भाषा का समाजशास्त्र. नई दिल्ली :राधाकृष्ण प्रकाशन

  प्रस्तुत पुस्तक में भाषा-अध्ययन के माध्यम से सामाजिक संरचना की तथा भाषायी लक्षणों के द्वारा सामजिक संगठन के लक्षणों की पड़ताल करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में बहुभाषिता पर चर्चा है जो कोड मिश्रण को समझने के लिए आवश्यक है।

- सिंह,प्रो.दिलीप.(2008). भाषा का संसार .नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन

  इस पुस्तक में कोड मिश्रण से सम्बंधित कुछ तथ्य है जो कोड मिश्रण को तथा उसकी सीमाओं को समझने में सहायक होंगे।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध विषय के अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक प्रविधि अपनाई गई है।

प्रथम-अध्याय

1. कोड की संकल्पना

भाषा के अध्ययन के लिए ,भाषा के दो पक्षों को देखा जा सकता है – रूपात्मक और प्रकार्यात्मक। भाषा का रूपात्मक पक्ष संरचना के आधार पर भाषा की प्रकृति को स्पष्ट करता है और प्रकार्यात्मक पक्ष सामाजिक व वैयक्तिक संदर्भो में उसकी विभिन्न भूमिकाओं पर प्रकाश डालता है। ऐसे यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था , जो भाषा की आंतरिक संरचना को व्यक्त करती है ,उसे भाषा का रूपात्मक संदर्भ कहा जा सकता है और जो भाषा को समाज और संस्कृति से जोड़ता है उसका संबंध मूलतः संप्रेषण व्यवहार में उसकी विभिन्न भूमिकाओं के साथ रहता है भाषा का यह पक्ष भाषा के उन विभिन्न रूपों का आधार होता है जो आंतरिक संरचना के धरातल पर एक होते हुए भी प्रयोग की दृष्टि से प्रयुक्ति,बोली,शैली, उपबोली आदि भेदों के रूप में व्यक्त होते हैं। भाषा एक तरफ अगर हमारे मानसिक व्यापार (चिंतन प्रक्रिया) का आधार है तो दूसरी ओर वह हमारे सामाजिक व्यापार (संप्रेषण प्रक्रिया) का साधन भी है।

कोड शब्द के साथ विभिन्न परिकल्पनाएँ जुडी हैं। यहाँ कोड के उस रूप का अध्ययन किया जायेगा, जिसे कोई समाज, मानव मुखोच्चरित यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की संप्रेषण व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करता है। प्रतीकों के निर्माण में केवल बाहरी जगत की वस्तुएँ ही योग नहीं देतीं बल्कि व्याख्याता या प्रयोगकर्ता का अपना इतिहास, उसकी सभ्यता और संस्कृति भी अपना योगदान देती है। इसलिए भाषिक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त शब्दों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अर्थ आवश्य होता है। सस्यूर , भाषा की प्रत्येक सार्थक इकाई को भाषिक प्रतीक मानते हैं । भाषिक प्रतीक को उन्होंने कथ्य और अभिव्यक्ति की एक संश्लिष्ट इकाई के रूप में माना हैं यहाँकथ्य से तात्पर्य प्रतीक के संकेतार्थ से है और अभिव्यक्ति से तात्पर्य इस संकेतार्थ को व्यक्त करने वाला ध्वनि समूह से ।

आधुनिक भाषाविज्ञान में किसी भाषा के भिन्न रूपों को ‘कोड’ कहा गया है । प्रत्येक समाज का अपना कोड होता है और प्रत्येक कोड का अपना एक समाज होता है ,जहाँ वह व्यवहार में लायी जाती है ।

किसी भी एक कोड को बोलने वालों के मस्तिष्क में उस कोड (भाषा)का एक रूप होता है। उदहारण के लिए सभी हिंदी भाषी लोगो के मस्तिष्क में हिंदी का एक रूप होता है ,उसी के आधार पर वे बोलते है और संप्रेषण कर पाते है। एक दूसर द्वारा कही गई बातो का अर्थ समझ पाते है। लेकिन जब कोड (भाषा) व्यवहार के रूप में प्रयुक्त होता है तब सभी व्यक्तियों की भाषा एकरूपी नहीं होती है अर्थात एक ही भाषा के कई व्यक्तियों द्वारा अलग -अलग परिस्थितियों में प्रयुक्त होने के कारण उस कोड के कई रूप देखने को मिलते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि प्रयोग के स्तर पर भाषा विषमरूपी होती है।

कोड की संकल्पना को समझाने के लिए सस्यूर द्वारा प्रस्तावित दो सबसे सार्थक युग्म माने जा सकते है – भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार। (1)" सस्यूर ने कोड के जिस रूप की अवधारणा दी है ,वह एक ओर 'सामाजिक वस्तु' हैऔर दूसरी ओर अपनी प्रकृति में वह सतत परिवर्तनशील और गत्यात्मक है । सामाजिक होने के कारण उसका एक पक्ष संस्थागत है ,जिसे सस्यूर ने 'भाषा व्यवस्था' की संकल्पना दी है ।" सतत परिवर्तनशील होने के कारण भाषा भेद कोड की अपनी नियति है । कोड के इस पक्ष को उन्होंने 'भाषा व्यवहार' की संकल्पना द्वारा समझने का प्रयास किया है। (1. भाषा विज्ञान : सैद्धांतिक चिंतन – श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ , पृष्ठ सं. 41)

भाषा व्यवस्था (लांग) :-

भाषा व्यवस्था संस्थागत होती है। भाषा-व्यवस्था समूहगत-अनुबंधन का परिणाम होता है। (2)"वह भाषिक प्रतीकों की उस संहिता (कोड) से सम्बद्ध होती है जो किसी भी प्रकार से वक्ता की निजी इच्छा या प्रतीकों के अपने माध्यम (उच्चारण या लेखन) से नियंत्रित नहीं होती ।" वह एक ऐसी सामाजिक वस्तु है जो स्वयं में प्रतिबद्ध है और व्यक्ति से जुड़ी होने के बावजूद वह व्यक्ति की सीमा से, उसके नियंत्रण से मुक्त है। व्यक्ति के इस नियंत्रण से मुक्त होने के कारण वह समरूपी है उसके प्रयोग, उसके नियम सभी के लिए समान है। अपनी प्रकृति में वह समरूपी होते हुए भी सामाजिक व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है, भाषा व्यवस्था (लांग) भी व्यवहार में उन सभी दायित्वों का ठीक उसी प्रकार निर्वाह करती है जिस प्रकार सामाजिक व्यवस्था में कोई व्यक्ति उस समाज का सदस्य होने के नाते उन सभी

सामाजिक दायित्वों और अधिकारों का वहन करता है और समाज के अन्य सदस्यों से उचित व्यवहार करता है। (2. हिंदी भाषा का समाजशास्त्र – श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ , पृ. – 32)

सस्यूर ने भाषा-व्यवस्था को मूल्यपरक व्यवस्था के रूप में स्पष्ट करने का प्रयास किया है और भाषा व्यवस्था को शुद्ध 'रूप' के संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किया है। उनका मानना था कि भाषा के शुद्ध रूप में केवल मूल्य होते हैं, जो भाषिक प्रतीकों के भौतिक उपादान या लक्षण द्वारा नियंत्रित नहीं किए जा सकते। इस तथ्य को उन्होंने शतरंज के खेल के उदहारण द्वारा समझने की कोशिश की। जिसे हम निम्न प्रकार से भाषा के साथ जोड़ कर देख सकते हैं –

शतरंज के खेल के नियम पहले से निर्धारित होते हैं उसे खेलने वालों को अपनी चाल उसी नियम के आधार पर चलनी होती है उसी प्रकार भाषा (कोड) के नियम भी पूर्व-निर्धारित होते हैं और उन्हीं नियमों के आधार पर उस कोड के प्रयोक्ता उसका व्यवहार करते हैं।

जिस प्रकार शतरंज के खेल में प्रयुक्त मोहरे एक निश्चित 'मूल्य' के रूप में पहचाने जाते है या एक निश्चित 'मूल्य' को व्यक्त करते हैं शतरंज के खेल कि संरचनात्मक व्यवस्था इकाइयों (मोहरो) के मूल्य को निर्धारित करती है जैसे – प्यादा एक घर सीधे चलता है और तिरछे मारता है, घोड़ा ढाई घर चलता है आदि, उसी प्रकार भाषिक इकाइयाँ भी अपनी मूल प्रकृति में मूल्यपरक होती है। और भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था उसकी इकाइयों के मूल्य को निर्धारित करती है जैसे- 'लड़का खेल रहा है' वाक्य में 'लड़का' संज्ञा, 'खेल' क्रिया आदि।

जिस प्रकार शतरंज की इकाइयाँ मूल्यपरक होने की वजह से मूल प्रकृति में 'रूपात्मक' होती है और अपने उपादान द्वारा नियंत्रित नहीं होती है, उसी प्रकार भाषा की इकाइयाँ भी अपनी मूल प्रकृति में रूपात्मक होती है जो अपने प्रयोक्ता द्वारा नियंत्रित नहीं होती है। उदहारण :- शतरंज का प्यादा किस वस्तु या धातु से बना है खेल के लिए यह महत्त्वपूर्ण नहीं होता। वह लकड़ी का हो या प्लास्टिक अथवा अन्य किसी चीज़ का, उसका मूल्य एक ही रहेगा। यदि कोई गोटी खो भी जाए तो उसके स्थान पर कोई और वस्तु लिख कर खेला जा सकता है क्योंकि शतरंज में महत्त्व उस प्यादे का होता है उसकी बनावट का

नहीं। ठीक उसी प्रकार भाषा में अभिव्यक्ति माध्यम के लिए हम ध्वनि या लेखन को अपनाते हैं हम संप्रेषण बोल कर करें अथवा लिख कर, लेकिन उनका भाषिक मूल्य समान ही होगा।

कोड की संरचना :-

कोड का संबंध भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था से होता है। कोड में प्रयुक्त शब्द 'प्रतीक' होते हैं जिनके द्वारा श्रोता या वक्ता उस कोड का अर्थ समझ पाता है। जैसे यदि हम 'किताब' बोलते है तो हमारे मस्तिष्क में एक प्रतीक विद्यमान होता है कि किताब एक ऐसी वस्तु है जो छपी होती है, जिसमें बहुत से पन्ने होते हैं जिन्हें पढ़ा जाता है। ये प्रतीक सार्थक होते हैं क्योंकि प्रत्येक प्रतीक का अपना एक अर्थ होता है जो भाषा व्यवस्था में मान्य होता है। ये प्रतीक ऐसे ही सार्थक नहीं माने जाते बल्कि इनको सार्थक बनाने वाली एक व्यवस्था होती है, कुछ नियम होते है जो इन प्रतीकों को सुव्यवस्थित करते हैं। उदहारण के लिए – 'गाया सीता गाना ने' ये वाक्य सुव्यवस्थित नहीं है अतः सार्थक भी नहीं है, लेकिन जब इन्हीं शब्दों को व्यवस्थित ढंग से रखा जाए – 'सीता ने गाना गाया' तो उसका सार्थक अर्थ निकलता है। अर्थात् भाषा के वाक्य में इन प्रतीकों का विशेष प्रकार का क्रम होता है जो इन्हें सार्थकता प्रदान करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'कोड ऐसे ध्वनि प्रतीकों कि सुव्यवस्थित कड़ी होती है जो सार्थक होते हैं। ' आधुनिक भाषा विज्ञान में किसी 'भाषा' या किसी भाषा के भिन्न रूपों को 'कोड' कहा गया है। कोड की संरचना, सामाजिक संरचना या सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करती है। हम जिस कोड का चयन करते हैं उसका समाज स्वीकृत अर्थ होता है जो उस कोड के प्रयोक्ता की सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित करता है। उदहारण के लिए – हिंदी भाषी समाज में 'आप' आदर सूचक कोड है। अतः जब हम किसी से आप कह कर बात करते हैं तब वहाँ हम उसे आदर देते हुए बात करते हैं। अर्थात् यहाँ भाषिक संरचना, हमारी सामाजिक संरचना को व्यक्त करती है कि 'तू' और 'तुम' की जगह हमने 'आप' का चयन किया क्योंकि ऐसा करना हमारी सामाजिक बाध्यता है।

(1)भाषा में वाक्य होते हैं। प्रत्येक वाक्य में 'रूप' या 'पद' होते हैं। रूप शब्दों में 'ने', 'को',से कारक चिन्हों को जोड़कर बनाया जाता है। शब्द एक या एक से अधिक ध्वनियों को जोड़कर बनता है। उदहारण के लिए – 'मोहन ने श्याम को डंडे से मारा' एक वाक्य है जिसमें 'मोहन ने' (कर्ता कारक का

रूप), 'श्याम को' (कर्म कारक का रूप), 'डंडे से' (कारण कारक का रूप) 'मारा' (क्रिया का रूप) चार 'पद' या 'रूप' है। इस तरह ध्वनिओं से शब्द बनते हैं, शब्द से पद बनते हैं, पद से वाक्य बनता है। (हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना – तिवारी, भोलानाथ- पृ.-56)। कोड की संरचना को व्यावहारिक स्तर पर निम्नाकित ढंग से समझा जा सकता है –

(2) वाक्य :- शब्द समूह की महत्तम सार्थक इकाई, जिसमें उद्देश्य और विधेय हो।

उपवाक्य :- वाक्य समानार्थी शब्द समूह।

पदबंध :- शब्द समानार्थी शब्द समूह।

पद :- प्रयोगार्हा (चलित) शब्द।

रूपिम :- शब्द की लघुतम सार्थक इकाई। (भाषा विज्ञान : सैद्धांतिक चिंतन – श्रीवास्तव , रवीन्द्रनाथ – पृ.-77)

भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था, भाषा सापेक्ष होती है और प्रत्येक व्यवस्था कुछ संरचनात्मक नियमों की अपेक्षा रखती है अर्थात् प्रत्येक भाषा अपने को भाषिक प्रतीकों की कड़ी के रूप में पिरोती है। जिसे हम भाषा कोड की संज्ञा देते हैं। जैसे हिंदी में यदि कर्ता + कर्म + क्रिया के क्रम का निर्वाह करते हैं तो अंग्रेजी में कर्ता +क्रिया + कर्म का। ये नियम ही भाषिक संरचना या उस संरचना के आधार पर बने भाषिक प्रतीकों की अभिरचना का निर्माण करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि " भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था अपनी प्रकृति में संरचनात्मक और प्रतिफल में भाषा सापेक्ष होती है।

भाषा व्यवहार

भाषा का व्यवहार व्यक्ति और समाज सापेक्ष होता है। भाषा व्यवहार अपनी प्रकृति में विषमरूपी होता है क्योंकि उसमें भाषा प्रयोग के कई विकल्पन मिलते हैं, ये विकल्पन न तो यादृच्छिक होते हैं न ही किसी त्रुटी के कारण उत्पन्न होते हैं। भाषा प्रयोग में इस विकल्पन जैसी भाषा वैविध्य के भीतर भी निश्चित व्यवस्था या नियम देखने को मिलता है। भाषा विकल्पन, भाषा विकास में सहायक एक महत्त्वपूर्ण तथा

प्रभावकारी उपकरण है जो प्रयुक्त कोड के सामाजिक अर्थ को भी उजागर करता है। भाषा-विकल्पन द्वारा न तो भाषा दूषित होती है न ही खंडित होती है।

भाषा व्यवहार में भाषा व्यवस्था के समान नियमबद्धता तथा निश्चित व्यवस्था नहीं मिलती है भाषा व्यवहार में विविधता को भाषा-विकास के लिए ब्लूमफील्ड अनिवार्य मानते है, भाषा व्यवहार, भाषा व्यवस्था का ही व्यक्त रूप होता है। (1)अपने व्यक्त रूप में वह मानव संबंधों की तरह बहुरूपी और व्यक्तिगत आवश्यकताओं की वैविध्यपूर्ण और विषमरूपी होता है। वैयक्तिक संबंधों से जुड़े होने के कारण वह भाषा का व्यष्टि रूप है। (भाषा विज्ञान- सैद्धांतिक चिंतन – श्रीवास्तव,रविन्द्रनाथ – पृ.- 62)

भाषा-व्यवहार मनुष्य के भाषिक ज्ञान का ऐसा प्रयुक्त रूप है जो किसी निश्चित और समय के अनुकूल निश्चित प्रयोग होता है। भाषा व्यवहार के इस प्रयोग के लिए सामाजिक संदर्भ अनिवार्य होते है, वक्ता जिस भाषा का प्रयोग करता है वह समाज में ही सम्प्रेषनीय होता है अतः उस भाषा के सामाजिक संदर्भ भी आवश्यक होने चाहिए तभी सम्प्रेषनीयता बनी रह सकती है। ये सामाजिक संदर्भ समरूपी न होकर विषमरूपी होते हैं। एक ही शब्द का अलग-अलग समाज में अलग-अलग सामाजिक संदर्भ होता है। लेकिन इसके बावजूद ये प्रयोग (भाषा-व्यवहार) व्यक्ति की अपनी व्यवहारिक सीमा द्वारा बंधे होते हैं। इसलिए भाषा व्यवहार, भाषा विज्ञान के आदर्श को साधने में असमर्थ होते हैं। भाषा व्यवहार (परोल) का क्षेत्र केवल व्यक्ति तक ही सीमित रहता है। भाषा व्यवस्था ही समाज में संप्रेषण के लिए भाषा व्यव्हार के रूप में आती है ,जो भाषा समुदाय के सभी सदस्यों के लिए अनिवार्य होती है। (1)"परोल (भाषा व्यवहार) वैक्तिक होने के साथ ही स्वछन्द और परिवर्तनशील भी है। भाषा के इस रूप का वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो सकता ,क्योंकि भाषा-व्यवहार के मध्य कोई सामान सिद्धांत नहीं बनाया जा सकता। इसमें व्यक्तिक चयन की असीमित संख्या है। " (आधुनिक भाषा विज्ञान – सिंह,कृपाशंकर, चतुर्भुज सहाय – पृ. -151)

भाषा व्यवहार संप्रेषण प्रक्रिया का आधार है। मनुष्य समाज में अपनी भावनाओं तथा विचारों को संप्रेषित करने के लिए , समाज के अन्य लोगों के साथ अपना संबंध स्थापित करने के लिए, जिस भाषा का प्रयोग करता है, जिस किसी कोड का चयन करता है वह भाषा व्यवहार के रूप में जानी जाती है।

भाषा व्यवहार भाषा व्यवस्था का ही व्यक्त रूप होता है दोनों में से किसी एक के भी आभाव में भाषा मृत प्रायः हो जाएगी। भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार एक दूसर का संदर्भ लेकर ही परिभाषित किए जाते हैं। कोई भी भाषा तभी जीवित तथा विकासवान मणि जाती है जब ये दोनों ही भाषा में द्वंद्वात्मक प्रक्रिया के रूप में विद्यमान हों। समरूपी तथा अमूर्त भाषा व्यवस्था को ही व्यक्ति विविध रूपों में, विभिन्न परिस्थितियों में विषय एवं समय के अनुसार भाषा व्यवहार द्वारा मूर्त बनता है और दूसरी ओर प्रयोग में लाये जा रहे भाषा को, भाषा व्यवहार की विशिष्ट तथा मूर्त घटनाओं को समाज द्वारा सामूहिक चेतना में नियमबद्ध तथा साधारणीकृत भाषा व्यवस्था का निर्माण होता है। अतः भाषा व्यवस्था एवं भाषा व्यवहार परस्पर सापेक्ष्य संकल्पनाए है जो मिल कर कोड की संकल्पना को बनती है। भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार के संयोग से कोड की जो संकल्पना हमारे सामने आती है वह संप्रेषण व्यापर के लिए अनिवार्य है। कोड मानव मन और उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होने के कारण समाज और जीवन से भी संयुक्त होता है।

यदि भाषा व्यवस्था को समूहगत अनुबंधन के रूप में देखा जा सकता है , जो किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छा से अलग सामजिक संकल्पनाओं के रूप में दिखाई देती है। तो भाषा व्यवहार हमारे दैनिक जीवन के समान विषमरूपी होता है। हमारे व्यक्तिगत संबंधो की तरह ही इसमें भी विषमता होती है। भाषा व्यवहार की प्रक्रिया कोडीकरण से जुड़ी होती है ,जो विकल्पों के चयन का परिणाम मानी जा सकती है। भाषा व्यवहार और भाषा व्यवस्था दोनों एक दूसर के पूरक मने जाते है और इनके इस संबंध से ही इन्हें सार्थकता प्राप्त होती है और ये कोड की संकल्पना को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं।

उपर्युक्त विवेचन द्वारा स्पष्ट हो जाता है कि संप्रेषण व्यवस्था मानव व्यवहार के लिए अनिवार्य है इसी के माध्यम से वह समाज के रूप में अपनी सत्ता स्थापित कर पता है। और संप्रेषण के लिए कोड अनिवार्य है। भाषा व्यवस्था तथा भाषा व्यवहार दोनों ही कोड के अभिन्न पक्ष है , इन्हीं के आधार पर वक्ता किसी भाषा को मस्तिष्क में कोड का रूप देकर समाज में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है तथा संप्रेषण प्रक्रिया में अपनी भागीदारी रखता है। भाषा व्यवस्था, भाषा व्यवहार और संप्रेषण की प्रक्रिया के आधार पर कोड की संकल्पना को स्पष्ट किया जा सकता है।

1.1.कोड का स्वरुप

भारत एक बहुभाषिक देश है अतः उसके कोड के स्वरुप पर विचार करना और भी आवश्यक हो जाता है । कोड के स्वरुप के संबंध में यह कहा जा सकता है कि हर कोड भौतिक धरातल पर स्थित प्रवाही तथ्यों को स्वयं के अनुसार भाषिक यथार्थ के रूप में विभाजित करने के कारण यादृच्छिक मानी जा सकती है । कोड व्यक्ति के विचार या दृष्टिकोण को काफी हद तक प्रभावित करती है । कोड को मानवीय व्यवहार का सशक्त माध्यम माना जा सकता है । सस्यूर के शब्दों में :- "भाषा प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके सहारे हम विचारों को व्यक्त करते हैं । इसी कारण इस व्यवस्था की तुलना लेखन पद्धति , गूंगे-बहरों द्वारा व्यवहृत वर्णमाला-व्यवस्था, प्रतीकात्मक कर्मकांड विधान ,शिष्टाचार के नियम , सैनिक संकेत चिह्न आदि के साथ करना संभव है । वस्तुतः इन विभिन्न क्षेत्रों के बीच भाषा की अपनी व्यवस्था सबसे अधिक महत्वपूर्ण है । "

कोड का स्वरुप समाज संदर्भित मन जाता है । सामाजिक संदर्भो के आभाव में कोड के स्वरुप को देख पाना कठिन है । कोड के सामाजिक संदर्भो के अध्ययन के लिए दो क्षेत्र माने जाते हैं – 'समाजभाषाविज्ञान' और 'भाषा का समाजशास्त्र' । समाजभाषाविज्ञान में समाज और भाषा के बीच पाए जाने वाले हर प्रकार संबंधों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है । भाषा का समाजशास्त्र 'भाषा अध्ययन' के माध्यम से सामाजिक संरचना के तह तक पहुँचने का प्रयास करता है । कोड समाज सापेक्ष प्रतीक व्यवस्था है और इस प्रतीक व्यवस्था के मूल में सामाजिक तथ्य निहित रहते हैं ।

कोड को सामाजिक प्रतीक की एक उपव्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है । कोड विचार-विनिमय का माध्यम है अतः वह समाज में प्रयुक्त होता है । कोड का स्वरुप वक्ता-श्रोता के सोच, उनके सामाजिक संबंध (जैसे – मालिक और नौकर के बीच बात-चीत में जो कोड प्रयुक्त होगा वह पति और पत्नी या दो मित्रो के बीच संप्रेषण का माध्यम नहीं बन सकता क्योंकि इन सबका सामाजिक संबंध एक जैसा नहीं है ।) और सामाजिक परिवेश को उद्घाटित करने में अपना विशिष्ट योगदान रखता है ।

कोड संप्रेषण व्यवस्था का अभिन्न साधन माना जाता है । कोड के कुछ प्रकार्य होते है जो संप्रेषण व्यवस्था के विभिन्न उपादानों के आधार पर निर्धारित किए जा सकते हैं । संप्रेषण व्यवस्था की प्रक्रिया में

एक तरफ वक्ता (एड्रेसर) होता है जो संदेश भेजता है और दूसरी तरफ श्रोता (एड्रेसी) होता है जो वक्ता द्वारा भेजे गये संदेश को ग्रहण करता है। वक्ता और श्रोता द्वारा जो संदेश भेजा और ग्रहण किया जाता है उस प्रक्रिया को संप्रेषण की संज्ञा दी जाती है। इस संदेश को भेजने और ग्रहण करने के लिए सबसे अनिवार्य तत्व है 'कोड'। अतः संदेश के आदान प्रदान हेतु यह आवश्यक है कि जिस कोड (नियम संहिता) द्वारा संदेश को वक्ता भाषाबद्ध करे ,श्रोता को भी उस कोड की जानकारी हो।

उदहारण के लिए यदि हम किसी विदेशी व्यक्ति से बात-चीत करना चाहते हैं तो हमें इसे कोड का चयन करना होगा ,जिसे वह समझ पाये और हम अपने संदेश को उस तक संप्रेषित कर सकें। जैसे –अगर अपने संदेश की अभिव्यक्ति के लिए वक्ता फ्रेंच या चायनीज भाषा के कोड को अपनाता है ,जिसका ज्ञान श्रोता को न हो, तब इसे स्थिति में श्रोता के लिए अर्थ ग्राह्य नहीं होगा ,उसके लिए उन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होगा क्योंकि वह उस कोड से परिचित नहीं होगा ,अतः सम्प्रशन के लिए इसे कोड की आवश्यकता होती है जो वक्ता और श्रोता दोनों को ज्ञात हो। इसलिए यह कहा जा सकता है कि 'कोड की समान जानकारी के आधार पर वक्ता और श्रोता के बीच संदेश का जो आदान प्रदान हो रहा है वह संप्रेषण है।

जिस कथ्य रूप में अपने विचार,भाव और अनुभूति को संदेश का रूप देने के लिए वक्ता किसी कोड का सहारा लेता है उस कथ्य को संदेश रूप में बांधने की प्रक्रिया को 'कोडीकरण' (एनकोडिंग) कहते हैं श्रोता भी इसी कोड की सहायता से संदेश के भाव को ग्रहण करता है। श्रोता द्वारा संदेश में निहित कथ्य को पाने की प्रक्रिया 'विकोडिकरण' (डि-कोडिंग) कहलाती है। और यह डिकोडिंग तभी संभव होता है जब कोडीकरण के समय वक्ता द्वारा अपनाये गये कोड से श्रोता भी परिचित हो।

वक्ता-श्रोता के बीच जिस संदेश का आदान-प्रदान होता है । उसका अपना कथ्यगत संदर्भ होता है,जिसका संबंध वक्ता और श्रोता के आंतरिक-बाह्य जगत के साथ होता है। इसे संकेतार्थ या संदेश की विषयवस्तु भी कहा जाता है। सार्थक संप्रेषण के लिए यह भी आवश्यक होता है कि वक्ता श्रोता के बीच आपस में भौतिक और मानसिक धरातल पर संबंध बना रहे। 'सरणी' इस संबंध को बनाये रखने की भूमिका निभाती है।

उपर्युक्त विवरण के आधार पर देखा जा सकता है कि संप्रेषण व्यवस्था में छः उपादानो की आवश्यकता पड़ती है। (1) संप्रेषण व्यवस्था के ये छः उपादान भाषा के प्रकार्य के विभिन्न प्रकृति को निर्धारित करते हैं। अतः इन छः उपादानो के आधार पर भाषा के निम्नांकित छः प्रकार्य संपन्न होते हैं-

- 'वक्ता' उपादान के द्वारा 'अभिव्यक्तिपरक' (भावात्मक) प्रकार्य संपन्न होता है।
- श्रोता उपादान द्वारा 'निदेशात्मक' (क्रियात्मक) प्रकार्य संपन्न होता है।
- 'संदर्भ' उपादान द्वारा 'संकेतपरक' (विषयात्मक) प्रकार्य संपन्न होता है।
- 'संदेश'उपादान के माध्यम से 'काव्यपरक' (कलात्मक) प्रकार्य की पूर्ति होती है।
- 'कोड' उपादान द्वारा 'तर्कपरक' (निरुपात्मक) प्रकार्य की पूर्ति होती है।
- 'सरणी' उपादान के माध्यम से 'सम्पर्कपर' (सम्बन्धात्मक) प्रकार्य संपन्न होता है।

(1.भाषा विज्ञान : सैद्धांतिक चिंतन – श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ –पृ. 68)

कोड का महत्वपूर्ण लक्षण उसका समाज संदर्भित होना है। लोगो के बीच संपन्न होने वाला संप्रेषण व्यापार कोड द्वारा ही संपन्न होता है, इसी मान्यता के आधार पर कोड एक सामाजिक यथार्थ है , सामजिक प्रकार्य है। संप्रेषण प्रक्रिया में कोड के प्रयोग हेतु वक्ता के साथ श्रोता का होना भी आवश्यक है। संप्रेषण की प्रक्रिया में दोनों की स्थिति परिवर्तित होती रहती है ,जो वक्ता है वह अगले क्षण श्रोता हो जाता है और श्रोता वक्ता का स्थान ग्रहण क्र लेता है। कोड की सम्प्रेष्णात्मक शक्ति ही कोड को अपरिमित शक्तिसंपन्न बनती है। (2) "संप्रेषण प्रक्रिया में वक्ता-श्रोता का आपसी संबंध सर्वाधिक निर्णायक घटक है। एक ओर यह कोड को नियंत्रित करता है और दूसरी ओर इसी के आधार पर संप्रेषण की सामाजिकी शैलियाँ बनती और स्थिर होती हैं। जैसे- रूढ़ शैली ,औपचारिक शैली, अनौपचारिक शैली , आत्मीय शैली आदि। इन शैलियों में से किसी एक का चयन ज्यादातर वक्ता-श्रोता के आपसी संबंधों पर निर्भर करता है। " (2. भाषा का संसार – सिंह, दिलीप – पृ.-24)

प्रायः देखा जाता है कि कोड शब्द को लेकर कई अवधारणाएं प्रचलित हैं लेकिन यहाँ कोड के उसी स्वरुप का अध्ययन किया जा रहा है जो भाषिक प्रतीक के रूप में मानवीय व्यवहार में सहायक होती है। कोड के स्वरुप को ठीक से समझने के लिए सस्यूर के 'प्रतीक विज्ञान' की संकल्पना पर भी विचार कर लेना चाहिए। सस्यूर द्वारा प्रस्तावित 'प्रतीक विज्ञान' की अवधारणा के संबंध में कुछ बातों को जान लेना आवश्यक है जो निम्नांकित हैं-

- 'प्रतीक विज्ञान' की संकल्पना के स्पष्टीकरण के लिए ही सस्यूर को भाषा अध्ययन का व्यापक संदर्भ मिला। उन्होंने भाषा की मूल प्रकृति,उसके स्वरुप को प्रतीक विज्ञान के संदर्भ में ही समझने का प्रयत्न किया। वे मानते थे कि प्रतीक विज्ञान का एक उपांग है –भाषा विज्ञान। और इसी आधार पर भाषा का यह स्वरुप स्पष्ट होता है कि भाषा के जिन पक्षों को अब तक हम महत्व देते हैं वे वस्तुतः उसके गौण पक्ष है।
- 'प्रतीक विज्ञान' और भाषा विज्ञान के संबंधों पर विचार करते समय दूसरा तथ्य यह मिलता है कि जहाँ एक ओर 'प्रतीक विज्ञान' भाषा की अभ्यंतर प्रकृति को समझने में सहायता प्रदान करता है तो वही दूसरी ओर भाषा विज्ञान , भाषा के अतिरिक्त अन्य प्रतीकों की व्यवस्था पर भी प्रकाश डालता है। सस्यूर के अनुसार कोड भाषिक प्रतीक का अच्छा उदहारण है , क्योंकि उसमे सामजिक अर्थ निहित होता है और इसलिए वह सामजिक अर्थ का सबसे अधिक सक्षम उपकरण माना जा सकता है।
- सस्यूर का मानना है कि समाज में अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त प्रत्येक उपकरण एक ऐसे 'सामूहिक मानक'के सिद्धांत द्वारा नियंत्रित होता है जिसे 'रुढी' कहा जाता है। संभवतः यह कहा जा सकता है कि कोड की संकल्पना और उसके स्वरुप को समझने के लिए ही सस्यूर ने 'प्रतीक विज्ञान' की संकल्पना को आगे तो बढ़ाया , लेकिन सामजिक व्यापार हेतु कोड के महत्व को पहचानते हुए 'प्रतीक विज्ञान' के केन्द्रक के रूप में 'भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था' को स्थापित करने का प्रयास किया।

कोड के स्वरुप के संबंध में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि भाषिक प्रतीक मूलतः अपनी प्रकृति में यादृच्छिक एवं रुढीपर हैं। सस्यूर ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए अपने भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तों की धूरी के रूप में उसे स्थापित किया है। कोड में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक परंपरागत होते है। कोई भी समाज किसी विशेष वस्तु या भाव के लिए जिस भाषिक प्रतीक का प्रयोग करता है वह प्रतीक उसे परम्परा से प्राप्त होता है।

1.2. कोड की परिभाषा

विश्व में बोली जाने वाली अनेक भाषाएँ है। और सभी एक कोड के रूप में अपना अस्तित्व रखतीं हैं,क्योंकि उनका प्रयोग भी समाज संदर्भित होता है। सभी भाषाएँ अपना एक प्रयोग क्षेत्र रखती हैं जहाँ उनका संदर्भ निर्धारित रहता है। कोड की परिभाषा पर विचार करते समय यह देखा जाता है कि कोड न केवल अपनी प्रकृति में ही अत्यंत जटिल और बहुस्तरीय है बल्कि अपने प्रयोग तथा प्रयोजन में भी बहुमुखी होती है ,क्योंकि भाषा केवल व्यक्ति के निजी अनुभवों और विचारों की अभिव्यक्ति का ही माध्यम नहीं है बल्कि समाज से जुड़ने तथा मानसिक व्यापर का भी साधन है। सामाजिक व्यापर के रूप में यदि कोड संप्रेषण की प्रक्रिया को पूर्ण करता है तो मानसिक व्यापर के रूप में वह चिंतन की प्रक्रिया साधन बनता है। इसलिए कोड की कोई एक परिभाषा निश्चित करना कठिन है। कोड को किसी एक सिद्धांत में पूरी तरह नहीं बाँधा जा सकता है क्योंकि कोड की प्रकृति एक साथ ही बदलती भी रहती है और जीवंत भी होती है।

(1)“ भाषा विज्ञान में रूपांतरण सिद्धांत में भाषा को मानसिक धरातल पर शुद्ध बोधात्मक ज्ञान या कोड माना गया है। किसी भाषा के व्याकरण का संबंध इस तथ्य से है कि वक्ता-श्रोता भाषा को व्यक्त करने और उसके बोधन और संज्ञान में किस प्रकार समर्थ है। इसके साथ ही वह देखता है कि वक्ता-श्रोता वास्तविक स्थिति में किस प्रकार भाषा की नियम-संहिता (कोड) के ज्ञान (भाषिक क्षमता) का प्रयोग करता है या उसे व्यवहार में लाता है। ” (1. भाषा और मस्तिष्क : भाषा और संज्ञान (आलेख) – व्यास, डॉ.मीनाक्षी)

किसी भी कोड को उसके समाज के सदस्यों के बीच परस्पर संपर्क तथा संवाद का माध्यम माना जाता है । प्रत्येक समाज एवं उसके सदस्यों के अस्तित्व के अनेक आयाम देखने को मिलते है इन सभी आयामों में कोड की विशिष्ट भूमिका होती है । मानव के व्यवहार के अलावा उसके चिंतन में भी कोड का उतना ही महत्वपूर्ण स्थान है । कोड समाज और व्यक्ति के पहचान का आधार होता है । कोई व्यक्ति किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है , किस प्रकार की ध्वनियों , शब्दावली , रूपों की प्रयोग करता है उससे उस व्यक्ति तथा समाज की भौगोलिक पृष्ठभूमि,सामाजिक स्थिति आदि का भी परिचय मिलता है । कोड की संकल्पना भिन्न-भिन्न भाषाओं (हिंदी, गुजरती, फ्रेंच आदि) तथा बोलियों के माध्यम से समाज में व्यक्त होती है । जैसा कि पहले भी कहा जा चूका है कि प्रत्येक कोड का अपना विशिष्ट समाज होता है " इसलिए भाषावैज्ञानिक भाषा की परिभाषा देते समय 'भाषा समाज या भाषा (समुदाय)' की अवधारणा पर बल देते हैं । " (भाषा (आलेख) – बाँठिया , डॉ.कुसुम – https://sol.du.ac.in)

कोड की परिभाषा पर विचार करते हुए प्रो.उमाशंकर उपाध्याय कहते हैं कि(1) " भाषा और कोड – यह समाजभाषावैज्ञानिकों द्वारा मानव भाषओं के लिए दिया गया एक शब्द है । मानव भाषाओ के लिए भाषा विज्ञान में अनेक शब्द (जैसे – भाषा,बोली,उपभाषा आदि शब्द) प्रचलित है । इनके बीच बनाये गये अंतर भाषिक दृष्टि से न होकर सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से होते हैं । भाषा, ध्वनि प्रतीकों की एक व्यवस्था है ,जिसके माध्यम से संप्रेषण किया जाता है । हम बोलते और सुनते तो हैं ध्वनि प्रतीकों को ,किन्तु संप्रेषण अर्थ का होता है । अर्थ का संप्रेषण कराने वाली यही ध्वनि प्रतीक 'कोड' कहलाते हैं । चूँकि स्थूल रूप में भाषा द्वारा ही यह कार्य किया जाता है ,इसलिए भाषा को ही 'कोड' कहते हैं । कोड एक व्यापक अवधारणा है । इसके अंतर्गत संप्रेषण को संभव बनाने वाली प्रत्येक प्रतीक व्यवस्था आ जाती है । " (1.भाषा और कोड - https://lgandlt.blogspot.com>2017/08)

हर भाषा रूप एक कोड है । भाषा के साथ मूल्यांकन जुड़ा होता है पर कोड इन सब भेदों को ख़त्म करता है भाषा के कई रूप हैं –मानक ,औपचारिक, अनौपचारिक ,साहित्यिक आदि लेकिन कोड के लिए सभी सामान है । भाषा के प्रत्येक विभेद को कोड कह सकते है । कोड एक प्रतीक प्रक्रिया के रूप में मानव मन में चलने वाली बोधात्मक प्रक्रिया एवं एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में देखने को मिलती है । संप्रेषण

प्रक्रिया में कोड का एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयोग इसलिए संभव हो पता है क्योंकि वह मानव के अंतर्मन को बहरी जगत से जोड़ता है। किसी कोड को व्यवहार के रूप में प्रयुक्त करने की क्षमता प्राप्त करने के लिए केवल भाषिक संरचना , भाषा का व्याकरण एवं शब्दकोश आदि का ज्ञान प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है बल्कि उचित संदर्भों में उपयुक्त संरचना का चयन , संदर्भगत व्यवहारिक प्रयोग की क्षमता एक सम्पूर्ण सामाजिकरण प्रक्रया के बाद ही आ सकती है।

कोड को प्रतीकात्मक संरचना के रूप में देखा जा सकता है। मानव द्वारा प्रयुक्त कोड की यह विशेषता है जो उसे पशुओ से अलग करती है। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि भाषा के अनेक रूप होते हैं जैसे –औपचारिक , अनौपचारिक , कार्यालयी , बोली ,उपबोली आदि और भाषा के ये सभी रूप कोड कहलाते हैं। कोड की संकल्पना में भाषा और बोली का सामान महत्व है। भाषा भी एक कोड है और बोली या उपबोली भी कोड है।

कोड के संबंध में एक तथ्य महत्वपूर्ण है –कोड की मनोवैज्ञानिक विशिष्टता। किसी भी कोड को बोलने वालों के अनुभवों से इसका अत्यंत निकट से सहचर्य होता है। भाषा मनुष्य के विकास के साथ ही उसके आचरण के रूप में विकसित होती है ,जिसे मनुष्य व्यवहार से पृथक करना असंभव है।

1.3. कोड और समाज का अंतःसंबंध

मनुष्य ने एक सामाजिक प्राणी के रूप में 'कोड' द्वारा जिस यथार्थ को व्यक्त किया वह बाह्य प्रकृति के साथ मनुष्य के व्यवहारिक संबंधो का प्रतिफलन है। इसके द्वारा ही मनुष्य समाज में एक दूसर से संपर्क स्थापित करता है। कोड और समाज के अंतःसंबंध को समझने के लिए दो दृष्टियाँ सामने आती है – 1.भाषा का समाजशास्त्र 2. समाजोन्मुख भाषा विज्ञान। कोड और समाज के बीच गहरा संबंध है। समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत कोड और समाज के संबंधों का अध्ययन भाषा की प्रकृति और उसके उद्देश्यों को समझने के लिए किया जाता है।

समाजभाषाविज्ञान में कोड और समाज के बीच पाए जाने वाले हर प्रकार के संबंधो का का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है। इसमें कोड की संरचना और प्रयोग के उन सभी पक्षों एवं संदर्भो का अध्ययन

किया जाता है जिनका संबंध सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रकार्य के साथ होता है अतः इसके अध्ययन क्षेत्र के भीतर विभिन्न सामाजिक वर्गों की भाषिक अस्मिता , भाषा केव प्रति सामाजिक दृष्टिकोण एवं भाषा की सामाजिक शैलियाँ , बहुभाषिकता का सामाजिक आधार , भाषा नियोजन आदि भाषा अध्ययन के वे सभी संदर्भ आ जाते हैं जिनका संबंध सामाजिक संस्थान से रहता है।

समाजभाषाविज्ञान, समाजशास्त्र और भाषाविज्ञान के मात्र अवमिश्रण का परिणाम नहीं है, न ही वह सामाजिक व्यवस्था और भाषिक व्यवस्था की कोई सम्मलित संकल्पना है । समाजभाषाविज्ञान यह मानता है कि कोड,समाज सापेक्ष प्रतीक व्यवस्था है तथा इस प्रतीक व्यवस्था के मूल में ही सामाजिक तत्व निहित रहते हैं। व्यक्ति अपने सामाजिक संबंध के अनुसार अलग-अलग व्यक्ति से बात-चीत करते समय अलग-अलग कोड का प्रयोग करता है उदाहरण – जब हम पद या संबंध में बड़े व्यक्ति से बात करते हैं तो आदरसूचक संबोधन का प्रयोग करते है जैसे-'आप कहाँ जा रहे हैं?' या 'कृपया आप मुझे ये बताएं कि .....'। वहीं जब हम अपने से छोटे (संबंध या पद में) व्यक्ति से कहते हैं कि 'तू कहाँ जा रहा है?'या 'तुम ये बताओ कि ...'। 'तू', 'तुम'या 'आप' में से किसी एक का प्रयोग अथवा एकवचन या बहुवचन में एक के स्थान पर दूसर के चयन के पीछे का निर्धारक तत्त्व भाषा प्रयोग का सामाजिक बोध ही होता है। भाषा को उसके इस सामाजिक बोध या सामाजिक प्रयोजन से अलग करके देखना ठीक नहीं है। इसलिए भाषा को शुद्ध भाषिक प्रतीक की व्यवस्था न मान कर , उसे (कोड) को सामाजिक प्रतीकों की एक उपव्यवस्था के रूप में समझना चाहिए।

संप्रेषण व्यापार समाज और मनुष्य के बीच सेतु का कार्य करता है और संप्रेषण की प्रक्रिया कोड के माध्यम से ही होती है। (1) विलियम लेबाव के अनुसार समाजभाषाविज्ञान , भाषावैज्ञानिक अध्ययन का वह क्षेत्र है जो भाषा और समाज के बीच पाए जाने वाले सभी प्रकार के संबंधों का अध्ययन-विश्लेषण करता है। वह भाषा की संरचना और प्रयोगों के उन सभी पक्षों एवं संदर्भों का अध्ययन करता है, जिनका संबंध सामजिक और सांस्कृतिक प्रकार्य से होता है । (1. भाषा का संसार – सिंह, दिलीप , पृ. -38) लेबाव कोड को 'शुद्ध भाषिक प्रतीकों की व्यवस्था' नहीं मानतें,बल्कि उसे 'सामजिक प्रतीकों की एक उपव्यवस्था' के रूप में परिभाषित करते हैं।

कोड को समाज द्वारा ही सार्थकता प्राप्त होती है। बात-चीत , संप्रेषण , बोलना, सुनना ये सब समाज में ही संभव हो पता है। अकेला मनुष्य संप्रेषण की प्रक्रिया को पूर्ण नहीं कर सकता , उसके लिए उसके बात-चीत में को दूसरा भागीदारी करने वाला भी चाहिए। भाषा व्यवहार द्वारा ही समाज का स्वरुप निर्मित होता है। कोड की निर्मित्ति ही समाज हेतु होती है। वास्तव में समाज और भाषा एक दूसर से इतने सम्बद्ध है कि दोनों एक दूसर के आधार मने जा सकते हैं। किसी भी कोड की संकल्पना केवल मनुष्य के मस्तिष्क में रहकर जीवित बनी नहीं रह सकती , बल्कि समाज में संप्रेषण का माध्यम बन्ने के बाद ही उसका जीवंत रूप हमारे सामने आता है। जिस कोड का प्रयोग व्यक्ति अपने दैनिक जीवन के व्यवहारों के लिए करता है ,अपनी चिंतन प्रक्रिया में भी उसी कोड का प्रयोग वह स्वाभाविक रूप से कर पता है। क्योंकि वह अपने परिवेश से उसी कोड का व्यवहार करना सीखता है ,वह उसकी मातृभाषा होती है , जिसे उसे अर्जित करने की जरुरत नहीं पड़ती।

भाषा संरचना और समाज संरचना एक दूसर के पूरक मने जाते हैं। किसी समाज में पाए जाने वाले सामाजिक स्तर-भेदों के अनुरूप भी कोड के विविध स्तर पाए जाते हैं। भाषा,बोली,उपबोली आदि कोड का आधार किसी भाषायी समाज की संप्रेषण व्यवस्था और उसकी जातीय चेतना है , जिसकी प्रकृति संस्थागत होती है। सामाजिक संस्थानों की प्रकृति स्थिर नहीं होती। सामाजिक विकास या परिवर्तन के दौरान उसकी प्रकृति और क्षेत्र में बदलाव आना स्वाभाविक है। कोड एक सामाजिक वस्तु है, जिसका जन्म समाज में तथा सामाजिक कार्य-व्यवहार के लिए होता है। डेलहाइम्स और फिशमैंन कोड और समाज के पारस्परिक संबंध का उल्लेख करते हुए सामंजस्यवादी दृष्टिकोण रखते हैं। उनका मानना है कि " भाषा विवेचन में केवल भाषा संरचना पर ही विचार नहीं किया जाता है,बल्कि समाज संरचना को भी उसके अंतर्गत सम्मलित करने की अपेक्षा है। भाषा विश्लेषण में समाज की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कोड के प्रयोग में कई स्तर से भेद देखे जा सकते हैं जैसे- आर्थिक स्थिति के आधार पर, शैक्षिक योग्यता के आधार पर , जाति/समुदाय के आधार पर व्यवसाय आदि कई स्तर पर।

भाषा का अधिग्रहण तथा उसकी व्यवहार क्षमता समाज में ही प्रतिपुष्ट होती है। भाषा और समाज का अन्योन्याश्रित संबंध होता है। उदहारण के लिए मनुष्य जिस भाषिक समुदाय में रहता है, उसी समुदाय की

भाषा का व्यवहार करता है। यहाँ तक कि उसके द्वारा बोली जाने वाली मातृभाषा भी उस समाज की होती है जिसका वह सदस्य होता है। यदि बच्चा जन्म लेने के तुरंत बाद किसी दूसरे समुदाय/समाज में चला जाता है तो वह उस समुदाय की भाषा को ही अपनी मातृभाषा के रूप में बोलता है। भाषा और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ होता है।

द्वितीय-अध्याय

2. कोड मिश्रण की अवधारणा

भाषा संपर्क से दो तरह की स्थितियाँ उत्पन्न होती है -1. या तो दो भाषा समुदायों के प्रयोक्ता एक दूसरे की भाषा सीख लें अथवा दो में से एक जो महत्वपूर्ण भाषा है (जिसके द्वारा संप्रेषण व्यापार हो सके)उसे सीख लेते हैं और संपर्क भाषा के रूप में उसका प्रयोग करते हैं इसका परिणाम यह होता है कि अपनाई गई भाषा की विभिन्न व्याकरणिक और शाब्दिक इकाईयां उसकी अपनी भाषा में आने लगती हैं और धीरे धीरे वे उनका (अपनायी गई भाषा का) प्रयोग स्वाभाविक रूप से करने लगते हैं। अर्थात अन्य भाषा की इकाईयाँ ग्राह्य भाषा में आकर उसी में आत्मसात हो जाती हैं। कुछ विद्वान भाषा की इस प्रक्रिया को भाषाई आदान मानते हैं।

ब्लूमफ़ील्ड,ग्लासिन जूनियर, यस्पर्सन, समारिन, हाकेट आदि विद्वान का भी यही मानना है कि एक भाषा से दूसरी भाषा में आदान की प्रक्रिया इकाइयों तक ही सिमित रहता हैं। हॉल जूनियर 'आदान' के संबंध में कहते हैं कि "यदि कोई रूप (न्यूनाधिक मात्रा में स्थानीय और रुपमीय अनुकूलन के साथ) सीधे ले लिया जाता हैं तो यह आदान है।" (भाषा और समाज – सिंह,डॉ.भारत-पृ.63) कोड मिश्रण का प्रारम्भिक रूप भाषाई आदान माना जाता हैं। लेकिन कोड मिश्रण एक व्यापक प्रक्रिया है और भाषाई आदान अपेक्षाकृत सीमित प्रक्रिया है।

जब एक भाषाई व्यवस्था दूसरे भाषाई व्यवस्था से कोई तत्व ग्रहण करती हैं तो यह प्रक्रिया आदान कहलाती हैं इस प्रक्रिया में एक भाषाई व्यवस्था से प्राप्त इकाइयाँ ग्राह्य भाषा में अपने को मिला देती हैं और अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखती हैं। आदान कि यह प्रक्रिया एक दृष्टी से कोड मिश्रण का आधार समझी जा सकती है। कोड मिश्रण से सम्बंधित एक पक्ष और देखा जा सकता है बहुभाषिक समुदाय में सामाजिक और व्यक्तिक आवश्यकता के कारण भाषाई संसरण कि स्थिति देखने को मिलती है। भाषाई संसरण कि इस प्रक्रिया में एक प्रमुख भाषा होती है और भाषाएँ कोड आश्रित होती है। इस स्तिथि में जो एक प्रमुख भाषा होगी उसमे अन्य भाषाओं की विभिन्न प्रकार की भाषिक इकाइयाँ मिश्रित हो जाती है।

कोड मिश्रण 'संप्रेषण का मूल घटक माना जाता है कोड मिश्रण द्विभाषिकता तथा बहुभाषिकताकि स्थिति के कारण उत्पन्न प्रक्रिया है' जो भाषा संपर्क और संप्रेषण प्रक्रिया का अनिवार्य अंग माना जाता है । कोड से दूसरे कोड में कुछ शाब्दिक इकाइयों के मिश्रण से कोड मिश्रण कि प्रक्रिया होती है लेकिन यह प्रक्रिया मनमाने ढंग से घटित नहीं होती है । कोड मिश्रण में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जिन दो भाषाओं के बीच कोड मिश्रण की प्रक्रिया है उन दो भाषाओं का उस भाषा समाज के संप्रेषण व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान होता है ।

कोड मिश्रण की प्रक्रिया भाषाओं के आपस में लम्बे संपर्क का परिणाम होती है । दो भाषाओं या उससे अधिक भाषाओं में जब इतना घनिष्ठ संबंध हो जाता है कि एक कोड का प्रयोक्ता अनायास ही या आवश्यकता के कारण दूसरी कोड के शाब्दिक इकाइयों का प्रयोग करने लगता है तब कोड मिश्रण कि प्रक्रिया उत्पन्न होती है व्यक्ति के संप्रेषण में सहायक होती है । कोड मिश्रण की प्रक्रिया भाषिक इकाइयों के विभिन्न स्तरों पर दिखाई देती है ।

कोड मिश्रण के संबंध में यह कहा जा सकता है कि जब व्यक्ति अपनी मात्रभाषा के अलावा किसी भी अन्य भाषा का ज्ञान रखता है और निरंतर उनका प्रयोग भी करता है तो बातचीत के दौरान वह अपनी मातृभाषा के सांचो में अन्य भाषओं (जिनका ज्ञान रखता है और निरंतर प्रयोग में लाता है) की इकाइयाँ जैसे संज्ञा विशेषण क्रिया पद आदि का स्वाभाविक रूप स्व प्रयोग करने लगता है । यदि अपने समाज का उदाहरण देखे तो हम अपनी मातृभाषा के साथ भी अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया जाता है ऐसा नहीं है कि केवल हिंदी, अंग्रेजी का ही मिश्रण होता है बल्कि भाषा और बोली के बीच भी मिश्रण होता है । उदाहरण के लिए हिंदी -अंग्रेजी का कोड मिश्रण –

रूचि –तुम्हारा risult कब तक आने वाला है ?

रश्मि –यूनिवर्सिटी के साईट पर तो secdule 4 दिसम्बर दिया है

भोजपुरी –हिंदी –अंग्रेजी का कोड मिश्रण

रूचि –तहार एग्जाम कब बा ?

रश्मि – नेक्स्ट मंडे से स्टार्ट होता

रूचि -1st पेपर कौन सा हअ

रश्मि –भाषा और भाषा विज्ञान

अंग्रेजी शब्दावली के कोड मिश्रण के पीछे हिंदी भाषा समुदाय की प्रव्रातियाँ दिखाई देती है। अंग्रेजी के सामान्य शब्दों का प्रचलन और उनकी स्वीकृति के कारण हिंदी में उनका मिश्रण एक साधारण प्रक्रिया बन गई है। इसके अतिरिक्त मातृभाषा या अपने दैनिक जीवन में व्यवहार में लायी जाने वाली भाषा में कुछ संकल्पनाओं के लिए शब्दों के न होने के कारण कोड मिश्रण होता है जैसे – इशू करना, सोर्स न होना, नाईट शूट , फर्नीचर आदि। कुछ ऐसे भी शब्द होते है जिनका प्रयोग अपनी भाषा में वर्जित होता है। और उनके लिए दूसरी भाषा के शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे – बाथरूम , लेट्रिन, बटक ,लूज मोशन आदि।

बोली के स्तर पर स्थानीय बोली का सबसे अधिक प्रभाव देखा जा सकता है। एक मुख्य भाषा जिसमे अन्य बोलियों या भाषओं के रूप मिश्रित होते है उसके कई रूप देखने को मिलते है यदि हिंदी को मुख्य भाषा माने तो बम्बई के स्थानीय शब्दों के मिश्रण से बम्बइया हिंदी

हिंदी अंग्रेजी के मिश्रण से हिंगलिश

भोजपुरी – हिंदी के मिश्रण से बिहारी हिंदी आदि

1.बम्बइया हिंदी –अपुन क्या बोलता है ?

ज्यादा माझी मत सटका

2 .हिंगलिश –आपकी ट्रेन का time क्या है ?

यूनिवर्सिटी यूनियन के लिए स्टूडेंट्स को फण्ड मिलता है।

भोजपुरिया हिंदी –तुम ज्यादा मत बतियाओ नई तो लतिया देंगे।

हमारा लुग्गा (साड़ी) केने है

मैथिली और इंग्लिश का मिश्रण –थैंक यू भैया.आहां बड नीक छी।

भोजपुरी के शब्द हिंदी में बड़ी सरलता से प्रयुक्त किए जाते है जैसे –नाख़ून के लिए नोह ,साड़ी के लिए लुग्गा , बैंगन के लिए भंटा , निवास के लिए डेरा , धुप के लिए घाम आदि भोजपुरी के ये शब्द साहित्य में भी प्रयुक्त होते है। कोड मिश्रण की प्रक्रिया अनौपचारिक बातचीत का हिस्सा मानी जाती है। औपचारिक स्थिति में कोड मिश्रण की जरुरत तब पड़ती है जब वक्ता को अपनी बात को संप्रेषित करने के लिए अपनी मुख्य भाषा में उस भाव के योग्य कोई सटीक शब्दावली या मुहावरा नहीं मिलता। ऐसी स्थिति में वह किसी अन्य भाषा के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करने लगता है।

2.1. कोड मिश्रण का अर्थ एवं कोड मिश्रण के कारण

कोड मिश्रण जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है कि कोड यानि भाषा के रूप जैसे बोली,उपबोली आदि और मिश्रण से तात्पर्य मिलाने से है इस प्रकार कोड मिश्रण का अर्थ है किसी मुख्य भाषा में अन्य भाषओं के इकाइयों का मिश्रण। कुछ लोग कोड मिश्रण और पिजिन की प्रक्रिया को एक ही मानते हैं लेकिन कोड मिश्रण और परिवर्तन में थोडा अंतर है। पिजिन भाषा में व्यक्तियों का समूह एक सामान भाषा का प्रयोग नहीं करता जबकि कोड मिश्रण में प्रयोक्ता एक भाषा के साथ बहुभाषाओं को मिश्रित करता है। कोड मिश्रण की प्रक्रिया आज के समाज में आम है। प्रत्येक क्षेत्र में कोड मिश्रण का प्रयोग किया जा रहा है विशिष्ट मिश्रित भाषाओं या जुड़े हुए लीड्स के लिए कई नाम हैं। इन नामों को अक्सर अकल्पनीय रूप से इस्तेमाल किया जाता है-

Chinglish

Denglisch

Dunglish

Franglaish

Franponaish

Greeklish

हिंग्लिश

Konglish

Manglish

Maltenglish

Poglish

Porglish

सिंग्लिश

Spanglish

Svorsk

Tanglish

Taglish

मनोभाषाविज्ञान के अनुसार - "code-mixing" is used in theories that draw on studies of language alternation or code-switching to describe the cognitive structures underlying bilingualism. During the 1950s and 1960s, psychologists and linguists treated bilingual speakers as, in Grosjean's term, "two monolinguals in one person"(http://en.wikipedia.org/wiki/code-mixing)

ऐसे क्षेत्रों में जहां दो या दो से ज्यादा भाषाओं में कोड-मिश्रण बहुत आम है, यह सामान्य हो सकता है कि दोनों भाषाओं के शब्दों को रोज़ाना भाषण में एक साथ उपयोग किया जाए। एक मिश्रित भाषा क्रेओल भाषा से अलग है। मिश्रित भाषा कोड स्विचिंग की स्थितियों से विकसित होती है।

श्रीधर और श्रीधर के अनुसार –"the transition from using linguistic units (words, phrases, clauses, etc.) of one language to using those of another within a single sentence" (http://en.wikipedia.org/wiki/code-mixing)

कोड-मिश्रण, भाषा में एक शब्द है जो एक से अधिक भाषा या वार्तालाप में बोली का उपयोग करने का संदर्भ देता है।द्विभाषी वक्ता, जो कम से कम दो भाषाओं को स्पष्ट रूप से बोल सकता है, दोनों भाषाओं के तत्वों का उपयोग करने की क्षमता रखता है और जब एक दूसर द्विभाषी या बहुभाषी के साथ बातचीत करता है तो वह अपने बातचीत के दौरान अन्य भाषाओं के तत्वों को भी मिश्रित करता है। और वे मिश्रित कोड उस मुख्य भाषा के साथ घुलमिल जाती है । इसका मतलब यह है कि यदि किसी अन्य भाषा के शब्दों को वाक्य में शामिल किया गया हो, तो वे पहली भाषा के व्याकरणीय नियमों के अनुसार अनुकूलित हो जाएंगे।द्विभाषावाद पर कार्य से पता चला है कि कोड-मिश्रण व्यवस्थित नियमों द्वारा नियंत्रित है। कोड मिश्रण में एक भाषा तो आधार भाषा होती है और दूसरी उसकी सहायक भाषा होती है उदहारण के लिए – 'आज मेरे पिताजी का जन्मदिन है'

'आज मेरे father का birthday है'

इस उदहारण में हिंदी आधार भाषा तथा अंग्रेजी सहायक भाषा है। कभी कभी हम अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए अपनी आधार भाषा में सहजता का अनुभव नहीं करते ऐसी परिस्थिति में हमें कोड मिश्रण की आवश्यकता पडती है ताकि हम अपने मंतव्य को ठीक प्रकार से व्यक्त कर सकें । एक भाषा में मिश्रित होने वाले भाषा के शब्दों को कुछ विद्वान दो वर्गों में बाँटते है –

1. आगत शब्द

2. शब्द मिश्रण

सीताराम झा आगत शब्दों को कोड मिश्रण की श्रेणी में नहीं मानते। उनके अनुसार-"जहाँ तक आगत शब्दों का प्रश्न है,उन्हें भाषा-मिश्रण के अंतर्गत परिणित नहीं किया जा सकता। कारण यह है कि आगत शब्द किसी भाषा के अभिन्न रूप बन जाते हैं। अंग्रेजी में फ्रांसीसी के लगभग पचास प्रतिशत शब्द प्रयुक्त होते हैं और तो और ,मास्टर और जज जैसे शब्द भी फ्रांसीसी के ही हैं। पर, वे अंग्रेजी के भी अपने शब्द बन गये हैं। इसी प्रकार कागज,लिफाफा (फ़ारसी) ,बेंच ,स्टेशन (अंग्रेजी) आदि शब्द हिंदी के अपने शब्द बन चुके हैं। ध्यातव्य है कि ऐसे प्रयोगों को भाषा मिश्रण नहीं कहेंगे। "(भाषाविज्ञान तथा हिंदी भाषा का वैज्ञानिक विश्लेषण – झा ,सीताराम 'श्याम'; पृ.272)

कोड मिश्रण की स्थिति को आर.के.अग्निहोत्री के इस उदहारण द्वारा समझा जा सकता है –" दिल्ली के किसी प्रवक्ता के बारे में सोच कर देखिये जिसकी मातृभाषा भोजपुरी है। वह घर पर भोजपुरी बोलता है ,बहुत औपचारिक स्थानों पर मानक हिंदी का तथा पत्र और लेख लिखने के लिए ,वक्तव्य देने के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करता है,प्रगतिशील साहित्य को लिखने के लिए वह हिंदी व अंग्रेजी भाषा का और अपने सहयोगियों के बीच वह हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण करता है इसके साथ ही वह कुछ पंजाबी भाषा को भी ग्रहण करता है। भारत में ये कोई बड़ी बात नहीं है यह नियम बन चुका है। "(studies in indian sociolinguistics- R.S.Gupta, kailash Aggarwal (edi) page 21)

कभी-कभी व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार तो कभी आदतन और कभी-कभी मज़बूरी में भी कोड मिश्रण करता है। कोड मिश्रण सदैव अनायास ही नहीं होता बल्कि उसके कुछ कारण भी देखने को मिलते है –

बहुभाषिकता :- विश्व के लगभग अधिकतर देश कम से कम द्विभाषित तो होते ही हैं। जिस समाज और देश में अनेक भाषाएँ प्रचलित होतीं हैं वहाँ उन भाषाओं का आपस में मिश्रण स्वाभाविक है। जैसे उदाहरण के रूप में यदि हम भारत को ही देखे तो यहाँ हिंदी,अंग्रेजी,गुजरती,मराठी ,बंगला , पंजाबी आदि भाषाओं के प्रयोक्ता एक साथ एक समाज में रहते है और अपने संप्रेषण तथा विचार-विनिमय के लिए एक दूसरे के भाषा के शब्दों को मिश्रित करके बोलते है। यह स्थिति स्वाभाविक कोड मिश्रण को जन्म देती है उदाहरण के लिए :-

मराठी व्यक्ति हिंदी बोलता है – हाउ क्या दीदी ऐसा होइंगा क्या ?

हिंदी भाषी पंजाबी को मिश्रित करता है – सब चंगा है ना प्रा ?

राजभाषा परिवर्तन के कारण :-देश के सभी भागों एवं समाज के सभी वर्गों पर राजभाषा का प्रभाव कम या ज्यादा जरुर पड़ता है यही कारण है कि जब एक राजभाषा के स्थान पर दूसरी राजभाषास्थापित होती है तब पहले की राजभाषा का भी प्रचलन थोडा बहुत जरुर रहता है। और नई राजभाषा का प्रयोग भी करना पड़ता है अतः दो राजभाषाओं के शब्दों में प्रायः मिश्रण की स्थिति देखने को मिलती है। जैसे भारत में फारसी , अंग्रेजी,और हिंदी तीनो भाषाओं के शब्दों का मिश्रण इस प्रकार हो गया है कि ये तीनो आपस में एक ही भाषा के रूप में घुल गए है। फारसी और अंग्रेजी दोनों ही इस देश की राजभाषा रह चुकी है और वर्तमान में हिंदी राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित है। अंग्रेजी और फारसी का प्रभाव हिंदी पर आज भी देखने को मिलता है। उदाहरण-

"आजकल तो सभी अफसरो की जी हजूरी करनी पड़ती है। "

"हाकिम ने आपको बुलावा भेजा है। "

"पोस्ट ऑफिस जाकर लिफाफा और टिकट दोनों लेते आओ"

"इम्तहान देने के बाद रिज़ल्ट का इंतजार हो रहा है। "

शिक्षा माध्यम में परिवर्तन के कारण :-जब कोइ भाषा शिक्षा का माध्यम बनती है तो उसका प्रचार प्रसारक स्वाभाविक रूप से होता ही है जब पहले से प्रचलित भाषा के स्थान पर कोई दूसरी भाषा शिक्षा के लिए अपनाई जाती है तब प्रायः दोनों भाषाओं के शब्द आपस में मिश्रित होने लगते है। भारत में हिंदी ग्रन्थ अकादमियों की स्थापना शिक्षा के भाषा का माध्यम परिवर्तन के उद्देश्य से की गई। वर्तमान समय में भाषा विज्ञान , राजनीति विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, अर्थशाश्त्र आदि विषयों के शिक्षण एवं परीक्षण का माध्यम अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी में किया जाने लगा है। ऐसी स्थिति में इन सभी विषयों से सम्बंधित कोडों का आपस में मिश्रण होने की प्रक्रिया सामने आती है जैसे- भाषा विज्ञान में 'विनिमय' शब्द अर्थशास्त्र से लिया गया है।

अंतरराष्ट्रीय संपर्क के कारण :-अंतरराष्ट्रीय संपर्क कई कारणों से स्थापित होते है जैसे शैक्षिक , सामाजिक,राजनैतिक , तकनिकी, आर्थिक, सांस्कृतिक। इन सभी क्षेत्रो के कोडों का आपस में मिश्रण होता रहता है। इनमे से कुछ शब्द आगत के रूप में अपनाए जाते हैं और कुछ अभ्यास तथा सुविधा हेतु मिश्रित भाषा के रूप में प्रयुक्त होते है। उदाहरण के लिए – मोरिशिश में भोजपुरी,फ्रांसीसी,अंग्रेजी आदि भाषाओं का समिश्रण देखने को मिलता है। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो लगभग सभी भाषाओं में प्रयोग किए जाते है जैसे- कस्टम , एक्साइज,लोकल टैक्स,एक्सचेंज,ओवरसीज , वीजा आदि। अंतरराष्ट्रीय सम्पर्क के कारण ही सभी भाषाओं में ऐसे शब्दों का मिश्रण देखने को मिलता है।

सतर्कता में कमी के कारण :- किसी भी भाषा के प्रयोग में कुछ सतर्कता आवश्य वरतनी चाहिए। बोलने और लिखने की शैली में थोडा अंतर होता है अतः यह ध्यान रखना चाहिए कि कहाँ किस परिश्थिति में किस भाषा में किस ढंग का किस ढंग से विचार व्यक्त करना है सरल भाषा में बोलने और लिखने का यह मतलब नहीं होता कि अनावश्यक रूप से कोड मिश्रण कर दिया जाये। कुछ लोग अनावश्यक शब्दों का मिश्रण भी करते है जैसे – "उसकी वाइफ को फीवर हो गया है। "

"मैं ज्यादा वेट नहीं करूँगा बिकॉज़ मुझे कॉलेज के लिए लेट हो जायेगा"

बात पर अतिरिक्त बल देने के लिए :-जब हम किसी व्यक्ति से कोई जरुरी बात कर रहे होते है तो उसका ध्यान अपनी बातों की ओर खीचने और अपनी बातों पर अतिरिक्त बल देने के लिए भी कोड मिश्रण का प्रयोग करते है। कभी कभी अतिरिक्त बल देने के लिए अपनी भाषा के शब्द के साथ साथ पुनरुक्ति के रूप में अन्य भाषा के कोडों को मिलाने की प्रवृति भी देखी जा सकती है। हिंदी भाषा में यह प्रवृति काफी सहजता से अपनाई जाती है जैसे –

'बहुत बहुत बधाई हो , कांग्रेचुलेसन'

'क्या मैं आ सकता हूँ , मे आई कमिंग। '

'तुम जा सकते हो , यू कैन गो। '

'ठीक है , ओके'

आवश्यकता :- जब अपनी भाषा में अपने किसी बात को व्यक्त करने के लिए पर्याप्त कोई शब्द न हो तो आवश्यकता के कारण दूसरी ज्ञात भाषा के शब्दों का प्रयोग कर लिया जाता है। जैसे-

"मैंने भी कुछ किताबें इशू कराएँ है। "

'मेरा वहाँ बहुत अच्छा सोर्स था। '

' सरकार के दिए गये नियमित समय पर ही इनकम टैक्स का रिटर्न सबमिट कराना है। '

वर्जित शब्दों से बचने के लिए :-वार्तालाप के समय कभी कभी ऐसा भी होता है कि कुछ क्रियाओं, अंगो या इनसे सम्बंधित वस्तुओं के नाम हमारे समाज में मानी नहीं होते या अशिष्टता के द्योतक होते है तो उस भाषा का वक्ता अपने संप्रेषण के लिए उन शब्दों को छोड़कर उसी भाषा के किसी पुराने, अप्रचलित शब्दों का प्रयोग करता है या किसी दूसरी ज्ञात भाषा के शब्दों का प्रयोग करता है। जैसे – हिंदी भाषा में कुछ शब्दों के स्थान पर संस्कृत और अंग्रेजी भाषा के शब्दों (शौच, शौचालय , लिंग,सहवास , लैट्रिंग, टॉयलेट इत्यादि) का प्रयोग करते है। उदाहरण के लिए –

'उस बच्चे ने पेंट में पोरटी कर ली है। '

' खुले में शौच न करें'

इस प्रकार के कई शब्द,अंग आदि हैं जिनका प्रयोग हिंदी भाषा में शिष्ट समाज वर्जित मानता है। उपर्युक्त कारणों से स्पष्ट हो जाता है कि कोड मिश्रण एक समाज संदर्भित प्रक्रिया है।

2.2 द्विभाषिकता, बहुभाषिकता एवं कोड मिश्रण

2.2.1 द्विभाषिकता :- द्विभाषिकता का तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमे समूह या समाज एक से अधिक भभाषा या दो भाषा का ज्ञान रखता हो। इसमें एक भाषा अपनी मातृभाषा होती है जो मानव अपने आस पास तथा परिवार से सीखता है। और दूसरी भाषा वह है जो व्यक्ति अपने ज्ञान होने के बाद अन्य भाषा के संपर्क में आकर सीखता है वह व्यक्ति द्विभाषिक होता है और वह अपने संप्रेषण व्यवस्था में इसका प्रयोग करता है।

द्विभाषिक की संकल्पना एक व्यापक संकल्पना है जिसमे दो भाषाओं का वैकल्पिक व्यवहार होता है कभी एक भाषा का तो कभी दूसरे भाषा का। इस प्रकार द्वेतभाव की सम्भावना स्वंय समाज के भीतर ही होती है जिससे समाज यथास्थिति उसको उजागर या प्रयोग करता है यदि समाज और व्यक्ति के बीच विभेद कि स्थिति है तो भाषा में भी यह भेद दिखाई देता है भाषाई भेद और सामाजिक भेद का सहसंबंध की पूर्णता के ही अंतर्गत सार्थक है किसी भी भाषा में संप्रेषण की यह प्रकृति होती है कि वह एक ओर तो एक से अधिक भाषाओं के बीच संतुलन बनाये रखती है और दूसरी ओर एक ही भाषा के बीच आतंरिक सामंजस्य को बनाये रखती है । इस प्रकार अपनी इस विषमरूपता द्वारा समाज की विषमरूपता को नियंत्रित एवं सुरक्षित रखती है। द्विभाषिकता तथा बहुभाषिकता की संकल्पना लगभग सामान रूप से एक जैसा ही है जिसमे एक से अधिक भाषा की आवश्यकता होती है

हॉगेन के अनुसार – "द्विभाषिकता के लिए 'प्रयोग' आवश्यक नहीं बल्कि 'दो भाषाओं का ज्ञान' द्विभाषिकता है। "(

ब्लूमफील्ड का मानना है कि द्विभाषिकता से आशय "किसी भाषा के मूल भाषी(native) की तरह दो भाषाओं का प्रयोग करने से है। "

द्विभाषिकता कई कारणों से उतपन्न होता हैऔर इन कारणों से उत्पन्न द्विभाषिकता के कारण ही किसी भाषा(कोड) में मिश्रण और परिवर्तन की स्थिति बनती है । इसलिए सबसे पहले हम द्विभाषिकता के कारण को जान लेते है । इसमें सबसे पहले संस्कृति , यातायात के साधन,धार्मिकता,राजनितिक, सामाजिक,आदि आते है जिससे द्विभाषिकता उत्पन्न होती है किसी भी भाषा का संप्रेषण समाज में होता है और समाज कई संस्कृतियों , धर्मों, व्यवसायों , राजनितिक व्यवस्थाओं से मिलकर बना है जिसमे अनेक संस्कृति एवं समाज के लोग अपनी भाषा, रीति- रिवाज , रहन-सहन,खान-पान सभी स्तरों पर एक दूसर से भिन्न होते है और जब इतनी विभिन्नता का एक साथ समाज सामना करती है तो भाषा समाज में द्विभाषिकता की स्थिति पैदा होती है।

यातायात के साधनों ने भी द्विभाषिकता की स्थिति को विकसित करने का कार्य किया है क्योंकि जब लोग एक स्थान से दूसर स्थान तक जाने लगे तो वहाँ की संकृति तथा भाषा का प्रभाव भी उन पर पड़ने

लगा तथा वे एक दूसरे के भाषा और संस्कृति को आत्मसात करते है जिससे द्विभाषिकता उत्पन्न होती है। एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग जिस समाज में होता है उसके वक्ता श्रोता के संप्रेषण सबंधी आवश्यकताओं के पूर्ति के लिए एक से अधिक भाषाओं का अर्जन (प्रयोग)वांछनीय हो जाता है यह आवश्यक नहीं कि समाज के सभी लोग द्विभाषी या बहुभाषी हो।

जिन भाषाई बहुसंख्यक की संख्यशक्ति काफी अधिक है या जिन लोगो को अपने क्षेत्र से बाहर जाने का अवसर नहीं मिलता और न ही आवश्यकता होती है वे सामाजिक बहुभाषिकता के बाद भी एकभाषी रहते है। परंतु बहुत कम देखने को मिलता है जहाँ समाज के सभी सदस्य द्विभाषी हो। अतः सामाजिक द्विभाषिकता और व्यक्तिगत द्विभाषिकता की समस्याओं में जहाँ अन्योंयात्मकता है। वह दोनों में अंतर भी है। चिंतन के स्तर पर भी जहाँसामाजिक द्विभाषिकता में निव्यक्तिकता का आधार हो वहाँ व्यक्तिगत द्विभाषिकता की समस्याएँ व्यक्ति केन्द्रित हो जाती है और उन्हें व्यक्ति के संदर्भ में ही समझना होता है।

प्राय सभी शिक्षित भाषायी अल्पसंख्यक, भाषायी राज्य,रास्त्रों के सीमावर्ती प्रदेशों के निवासी (शिक्षित, अशिक्षित) दोनों ही द्विभाषी होते है। व्यक्ति के परिपेक्ष्य में द्विभाषिकता का विस्तारण ही बहुभाषिकता है। दूसरी भाषा सीखने के बाद आवश्यकता तथा रूचि के अनुसार तीसरी या चौथी भाषा सीखना बहुभाषी है।

द्विभाषिकता के कारण ही वक्ता – श्रोता के बीच कोड मिश्रण या कोड परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जब कोई व्यक्ति एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखता है। तव वह अपने संप्रेषण में एक से अधिक कोडों (भाषा) का मिश्रण एवं परिवर्तन करता है। इ९स्मे वह अपनी अच्छी अभिव्यक्ति या अपनी बात को स्पष्ट रूप से श्रोता को समझाने के क्रम में भी कोड परिवर्तन या कोड मिश्रण करता है।

2.2.2 बहुभाषिकता- बहुभाषिकता का तात्पर्य वैसी भाषिक इकाई से है जिसमे वक्ता के पास एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान होता है। जिसमे एक तो उसकी मातृभाषा तथा अन्य दो या दो से अधिक अर्जन भाषा जिसे वह अन्य समाज के द्वारा संप्रेषण के लिए अर्जन करता है। बहुभाषिकता शब्द की संकल्पना एक से अधिक भाषाओं की प्रयोग की क्षमता से है। बहुभाषिक भाषा का कोई एक रूप नहीं होत्सा है यह किसी समाज विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के भाषा प्रयोग से संबंध है जो भाषाओं के प्रयोग

को द्विभाषिक कहा गया है और दो से अधिक भाषाओं की प्रयोग क्षमता को बहुभाषिकता कहा गया है। द्विभाषिकता की स्थिति मानव की आवश्यकताओं , जरूरतों से उतपन्न है। प्रत्येक समाज एवं व्यक्ति जो बहुभाषिक है वह विभिन्न भाषाओं का प्रयोग संदर्भानुसार करता है। दो या दो से अधिक भाषाओं के ग्रहण और अभिव्यक्ति की क्षमता बहुभाषिकता की स्थिति है। इस दृष्टी से विश्व के विभिन्न भागो में रहने वाले लोग काफी संख्या में बहुभाषिक कहे जा सकते है।

ब्लूमफील्ड के अनुसार :---दो भाषाओं को मातृभाषा के रूप बोलने की क्षमता द्विभाषिकता की स्थिति है। ब्लूमफील्ड की यह परिभाषा एक आदर्श स्थिति की ओर संकेत करती है। परंतु भाषा का मुख्य उद्देश्य या ध्येय विचारो या भावों का संप्रेषण है। और यह तो औसतन कम स्थिति देखी जा सकती है जिसमे कोई व्यक्ति दो या दो से अधिक भाषाओं में मातृभाषावत क्षमता रखता हो। द्विभाषिकता की स्थिति तो विभिन्न छोटे बड़े उद्देश्यों को लेकर उतपन्न हो जाती है। व्यक्ति अपनी बातों को दूसरे की भाषा में समझा दे और उसकी बात को ग्रहण कर ले या दोनों भाषा- भाषी अपनी भाषा के अतिरिक्त किसी अन्य तीसरी में विचारो का संप्रेषण की क्षमता रखते हो तो वह स्थिति द्विभाषिकता की स्थिति होगी। अतः ब्लिम्फिल्ड की परिभाषा अपने आप में सिमित अर्थ को समेटे हुए है। यह परिभाषा द्विभाषिकता या बहुभाषिकता के व्यापक स्वरुप की व्याख्या नहीं करती। ब्लूमफ़ील्ड की परिभाषा के आधार पर यदि विश्व की भाषिक स्थिति का अवलोकन करें तो बहुत कम समाज द्विभाषिक की कोटि में आ पाएंगे।

मैके :----दो या दो से अधिक भाषाओं का वैकल्पिक प्रयोग बहुभाषिकता है। मैके भाषा के प्रयोग पर बल देते। उनके अनुसार द्विभाषिकता प्रयोग की विशिष्टता है। द्विभाषिकता में महत्त्व इस बात को नहीं दिया जाता कि किस भाषाई कोड का प्रयोग किया जा रहा है बल्कि उदंदिष्ट संदेश को संप्रेषित करने पर बल दिया गया है। इसीलिए द्विभाषिकता भाषा की क्षमता की वस्तु ना होकर भाषा व्यवहार की वस्तु है।

मैके बहुभाषिकता को वैक्तिक मानते है और सामाजिक बहुभाषिकता को व्यक्तिक बहुभाशिक्ताओं का समुदाय मानते है। लेकिन वे ये भी कहते है कि जब दो एकभाषिक समुदाय परस्पर संपर्क में आते है तो उसके परिणाम स्वरुप द्विभाषिकता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

साइमन:- इनके अनुसार बहुभाषिकता की समस्या बहुभाषिकता के पीछे भाषायी अस्मिता , धर्म- भेद , वंश- परंपरा , वर्ग विरोध और विदेशी संपर्क आदि इसके मुख्य कारण है इसके साथ ही विभिन्न विशाल औधोगिक नगरी व ऐसे महानगरों के बनजाने से जिसमे विभिन्न भाषा समुदाय के लोगों के रहने के कारण भी बहुभाषिकता की स्थिति उतपन्न हो जाती है। प्रवासी समाज चाहें अपनी भाषा की मांग करे या न करे लेकिन उनकी अपनी भाषा विकल्प के रूप में धीरे धीरे विउक्सित होती रहती है तथा परस्पर विरोधी भाषा समाज प्रतिस्पर्धा के कारण अपनी भाषा के विस्तार के कारण या विस्तार के लिए विभिन्न संस्थानों की स्थापना करती है। इसी स्पर्धा में कई भाषाएँ एक साथ समाज , अपना देश यहाँ तक की सीमा को भी पाटकर महत्वपूर्ण हो जाती है

साइमन का मत यह भी है कि बहुभाषिकता राजनैतिक व्यवस्था और नीतियों के कारण भी उतपन्न हो जाती है। साइमन का उपर्युक्त विचार बहुभाषिकता के संबंध में एक व्यापक दृष्टी देते है बहुभाषिकता कजी स्थिति उत्पन्न होने के कई कारण है । जैसे –विभिन्न सामाजिक ,राजनितिक , आर्थिक , व्यावसायिक , सांस्कृतिक आदि कारणों से बहुभाषिकता कि स्थिति उत्पन्न ह्योती है।

जैसे- भारत पाकिस्तान के वटवारे के समय पाकिस्तान के लोग भारत और भारत के विभिन्न प्रान्त लोग पाकिस्तान गए इस क्रम में वहाँ और यहाँ दोनों समाजो में बहुभाषिकता की स्थिति स्वतः उतपन्न हो गई।

व्यवसाय :- व्यवसाय के कारण भी समाज में बहुभाषिकता की स्थिति उतपन्न हो जाती है क्योंकि कोई भी व्यापारी अपने व्यवसाय के लिए एक समाज से दूसरे समाज में जाता है और संप्रेषण करता है जिससे बहुभाषिकता की स्थिति उतपन्न हो जाती है। और इसमें मुख्य सहायक के रूप में यातायात के साधन है जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति अन्य समाज से संपर्क जल्दी कर लेता है। तथा भाषाई स्तर पर समाज में बहुभाषिकता उत्पन्न करता है।

धार्मिकता:-धार्मिकता के कारण समाज में बहुभाषिकता की स्थिति उतपन्न हो जाती है जैसे- अगर कोई उत्तर भारत का व्यक्ति तिरुपति बालाजी मन्दिर (तिरुपति)जाता है तो वह अपने कार्यकलाप के लिए वहाँ की भाषाओं में संप्रेषण करने की कोशिश करता है _ और वहाँ के लोग उस व्यक्ति की भाषा को समझने

का प्रयास करते है। इस तरह से समाज में परस्पर बहुभाषिकता कि स्थिति बनी रहती है। जिससे भाषाई रूप में कोड मिश्रण भी होता है।

2.2.3 बहुभाषिकता एवं कोड मिश्रण - कोड मिश्रण का संबंध द्विभाषिकता एवं बहुभाषिकता से है। कोई समाज या व्यक्ति कोड मिश्रण तभी कर पता है जब वह कम से कम दो भाषाओं को जानता हो। कोड मिश्रण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वक्ता के वार्तालाप में चल रही भाषा या कोड के बीच किसी अन्य कोड (भाषा)का प्रयोग कर देता है और यह तभी संभव है जब वक्ता द्विभाषी या बहुभाषी हो। कोड मिश्रण एक सामान्य प्रक्रिया है। सामान्यत जिसका प्रयोग कम शिक्षित या अशिक्षित भी करते है। जबकि यह कोड परिवर्तन में संभव नहीं है। क्योंकि वहाँ पूरे वाक्य के स्तर पर एक भाषा कोड से दूसरे भाषा कोड में परिवर्तित हो जाता है। इसके (कोड परिवर्तन)के लिए वक्ता को दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। परंतु कोड मिश्रण में इसकी छुट है। अशिक्षित व्यक्ति अपर्याप्त शब्दों के आभाव में प्रचलित अन्य कोड के कुछ शब्दों को अपने कोड में स्वतः प्रयोग कर लेते है। क्योंकि वह कोड (भाषा) शब्द उस समाज में प्रचलित एवं रूढ़ हो गये है जैसे- कलम-पेन, नाख़ून –नेल्स इत्यादि कोड मिश्रण भाषा से भाषा में या बोली से बोली में दोनों में हो सकती है हम सामान्यतः बोल्तेते वक्त किसी अन्य भाषा या बोली के कुछ शब्द अपने संप्रेषण में प्रयोग करते है। जिससे कोड मिश्रण की स्थति लगातार बनी रहती है। कोड मिश्रण का प्रयोग अपनी बातों को स्पष्टता, सरलता से व्यक्त करने के लिए भी प्रयोक्ता द्वारा किया जाता है।

कोड मिश्रण भाषा संपर्क से उतपन्न होने वाली स्थिति है। जिसमे दोनों भाषा समुदायों के प्रयोक्ता एक दूसरे की भाषा सीख लेते है। या दो में से कोई एक किसी भी कारणवश जो महत्वपूर्ण भाषा है उसे सीख लेता है और उसका प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में करता है। इसका बहुत बड़ा प्रभाव यह भी होता है कि अपनाई हुई विभिन्न शाब्दिक तथा व्याकरणिक इकाई उसकी अपनी भाषा में आने लगती है और कुछ ही समय में स्वाभाविक रूप से प्रयोक्ता अपने संप्रेषण व्यवस्था में इसका प्रयोग करने लगता है। कुल मिलकर यह कह सकते है कि अन्य भाषा की इकाईयां ग्राह्य भाषा में आकर उसी में आत्मसात या एकीभूत हो जाती है। भाषा कि इस प्रक्रिया को हम भाषायी आदान- प्रदान कह सकते है।

अतः यह कहा जा सकता कि एक भाषायी व्यवस्था दूसरी भाषायी व्यवस्था से जब कोई तत्व ग्रहण करती है तब इस प्रक्रिया को आदान कहा जाता है। और जब कोई एक एक भाषाई व्यवस्था दूसरी भाषायी व्यवस्था में अपना तत्व स्वतः समाहित कर देती है तो वह भाषायी प्रदान होता है। इस प्रकार भाषायी आदान प्रदान से समाज में कोड मिश्रण की प्रक्रिया होती है जिसमे आदान में दात्री भाषा से ग्रहण की गई इकाईयां ग्राह्य भाषा में अपने आप को एकीभूत कर लेती है। और अपना एक कोई स्वतंत्र रूप नहीं रखती है। इन इकाईयों का वर्तमान रूप ग्राह्य भाषा की प्रकृति के अनुसार ही निर्मित होता है।

कोड मिश्रण वास्तव में किसी बहुभाषिक समुदाय में सामाजिक,शैक्षिक ,सांस्कृतिक , व्यावसायिक , आर्थिक आवश्यकताओं व वक्ता- श्रोता के संबंध उनके सामाजिक स्तर आदि के अनुसार भाषा की प्रकृति के तहत उसके सदस्यों द्वारा जाने अनजाने दो या दो से अधिक भाषा अथवा भाषा रूपों के बीच होने वाले संसरण का नाम है। बहुभाषिकता के कारण कोड मिश्रण के अतिरिक्त भाषा से सम्बंधित दो प्रक्रियाएं और सामने आती है –

1.भाषा अनुरक्षण

2. भाषा विस्थापन

भाषा अनुरक्षण और भाषा विस्थापन की बात ऐसे भाषा समुदाय के संदर्भ में बोली जाती है जिस समुदाय की सामाजिक स्थिति दूसरे भाषा समुदाय जो उस समुदाय से मत्वपूर्ण या उच्चे होते हैं उनके बीच में होती हैं। यह स्थिति व्यक्ति के स्तर पर भी होती है। जब कोई व्यक्ति अपने भाषा समुदाय से संस्कृतिकऔर सामाजिक दृष्टी से अलग हो जाता है तो यह निश्चित संभव है कि वह अपनी मातृभाषा से बहुत सरे प्रयोगों को क्षेत्रो में विस्थापन करे, और उसकी आने वाली अगली पीढ़ी उस भाषा से पूर्ण रूप से खुद को विस्थापित कर लें। यह स्तिथि बहुत सारे देशो – विदेशो में देखी जा सकती है। जिनमे से एक ब्रिटेन भी है जहाँ विभिन्न यूरोपीय अंग्रेजी भाषा को अपना लेते है। परंतु यदि हम कुछ अन्य देशो की भी जैसे भारत की बात करें तो हम ये कह सकते है की यहाँ भाषाई अनुरक्षण की स्थिति अत्यधिक मजबूत है। चूँकि भाषाई विस्थापन की क्रिया की शुरुआत यहाँ भी हो गई है और व्यक्ति दूसरे भाषा समुदाय में भिन्न भिन्न भाषिक सन्दर्भों में अपनी मूल भाषा या मातृभाषा का विस्थापन करने लगता है। ऐसी स्थिति में वह

विचार विनिमय के भाषा कोड का प्रयोग करता है। यह स्थिति महानगरो में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

कुछ शोध कार्यों के अनुसार यह प्रमाणित हो चूका है। जैसे दिल्ली जैसे महानगरों में यदि हम सिन्धी भाषा समुदाय की बात करें तो बहुत प्रयासों के बाद भी वर्तमान पीढ़ी में 25-26 से कम आयुवर्ग में सिन्धी (उनकी मातृभाषा) सिर्फ ग्रहण के स्तर पर ही अनुरक्षित है जबकि व्यवहार के स्तर पर यह वर्ग सिन्धी (मातृभाषा) से विस्थापित हो चूका है। परंतु कुछ अत्यधिक आयुवर्गो में अनुपातिक अंतर से अनुरक्षण अभी भी बरक़रार है। अन्य भाषा भाषी जैसे – कन्नड़ , तमिल, तेलगु,बंगला , मलायम ,उड़िया इत्यादि समुदायों में स्थिति थोड़ी अलग है।

इन समुदायों में मातृभाषा के प्रति अनुरक्षण की स्थिति अभी बनी हुई है। परंतु इन वर्गों ने अपने आवश्यकता अनुसार भिन्न भिन्न महानगरो में एक या एक से अधिक संप्रेषण कोड भी अपना लिया है। यहीं कारण है की इन वर्गों में कोड परिवर्तन की स्थिति बनी रहती है। भाषा अनुरक्षण के मुख्य कारणों में से एक समाज और भारतीय संस्कृति भी है। जो वक्ता को कभी भी भाषा विस्थापन के लिए मजबूर नहीं करता इसके विपरीत यह अनुरक्षण को प्रोत्साहित करता है।

कोड परिवर्तन एवं कोड मिश्रण भाषा के विकास की यात्रा तथा भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया के महत्त्व को द्योतित करते है। यह संकल्पनाएँ (कोड परिवर्तन तथा कोड मिश्रण)यह दर्शाती है कि कैसे प्रकार्य द्वारा नए और मिश्रित कोड का निर्माण होता है और कैसे यह नया कोड किसी वेशेष सामाजिक वर्ग या भाषा समुदाय द्वारा स्वीकृति प्राप्त करता है। इसके साथ ही इन संकल्पनाओं द्वारा ये भी पता लगता है कि भाषा प्रकार्य की क्षमता का प्रसार कैसे होता है तथा उसकी (भाषा) की प्रकृति कैसी होती है तथा ये नया कोड कैसे किसी सामाजिक वर्ग के संप्रेषण नियमो में विकल्प बन जाता है।

2.3 कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन में अंतर

कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन की प्रक्रिया भाषा की विकास यात्रा को तथा भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया को दर्शाता है। यह दोनों ही संकल्पनाएँ ये बताती है कि कैसे प्रकार्य द्वारा नए और मिश्रित कोड का

निर्माण होता है और कैसे यह नया कोड किसी समुदाय द्वारा या सामाजिक वर्ग द्वारा स्वीकृति प्राप्त करता है। इन संकल्पनाओं द्वारा यह भी पता चलता है कि भाषा के कार्य करने की क्षमता का विकास कैसे होता है या विस्तार कैसे होता है। और उसकी प्रकृति कैसी होती है। कोई नया कोड कैसे किसी समाज किसी समाज के संप्रेषण नियमो का विकल्प बन जाता है जैसे हिंदी और इंग्लिश के मिश्रण से 'हिंग्लिश'।

कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन में कुछ अंतर /भेद देखने को मिलते हैं जो निम्नांकित हैं -

- ❖ कोड मिश्रण में भाषा प्रयोग करने वाला या संप्रेषण करने वाला दो या दो से अधिक भाषाओं के विभिन्न इकाईयों एवं दो भिन्न कोडों को इस प्रकार मिश्रित करता है और उसका प्रयोग करता है कि एक नया मिश्रित कोड विकसित हो जाता है। जबकि कोड परिवर्तन में बहुभाषिक समुदाय में भाषा प्रयोग करने वाला विभिन्न संदर्भो और सामाजिक भूमिकाओं से बाधित होकर संदर्भ के अनुसार विकल्प रूप से विभिन्न भाषिक कोड का प्रयोग करता है।
- ❖ कोड मिश्रण का क्षेत्र वाक्य करे अंदर तक ही सिमित रहता है क्योंकि कोड मिश्रण किसी वाक्य के भीतर शब्द स्तर एवं पद स्तर तथा पदबंध स्तर पर मिश्रित होता है पूरे वाक्य के स्तर पर नहीं होता। अगर पूरे वाक्य स्तर पर एक कोड के बजाय दूसरे कोड का प्रयोग किया जाता है तब कोड परिवर्तन होता है। कोड मिश्रण में वाक्य के भीतर विशेष सीमा में एक भाषा से दूसरे भाषा में वार्तालाप की आवश्यकता के कारण विभिन्न इकाईयों का परस्पर आदान प्रदान होता है। कोड परिवर्तन प्रोक्ति के स्तर पर होती है कोड परिवर्तन चाहें किसी भी भाषा रूप में हो परंतु वह एक वाक्य तथा प्रोक्ति के स्तर पर ही हो सकता है।
- ❖ कोड मिश्रण में ऐसा भी संभव है कि भाषा प्रयोक्ता किसी एक कोड में पूर्ण रूप से पारंगत हो या दक्ष हो तथा दूसरे कोड में वह पूर्ण रूप से जानकार न हो या सामान्य ज्ञान रखता हो तो भी संप्रेषण में तथा लेखन में वह कोड मिश्रण कर सकता है। जबकि कोड परिवर्तन में भाषा प्रयोक्ता एक से अधिक कोडों में पूर्ण रूप से ज्ञान रखता हो तभी प्रयोक्ता कोड परिवर्तन कर सकता है।
- ❖ कोड मिश्रण, भाषा में, भाषा की एक निरंतर प्रकृति के अनुसार ही होती है। भाषा की स्वाभाविक प्रकृति के विपरीत भाषिक इकाईयां किसी भी भाषा में ग्रहण करने योग्य नहीं होती है

। क्योंकि उसमे संप्रेषण में असुविधा की स्थिति सदैव बनी रहती है। भाषा मिश्रण में दो या दो से अधिक कोडों के सम्मिश्रण से एक नया मिश्रित कोड जन्म ले लेता है। कोड परिवर्तन दो या दो से अधिक कोडों का प्रयोग विकल्प के रूप में होता है। इसमें सभी कोड अलग अलग होते है लेकिन वे सभी कोड एक प्रोक्ति के अंग हो सकते है।

- ❖ कोड मिश्रण अशिक्षित व्यक्ति तथा समाज, बोली तथास भाषा दोनों रूप में स्वीकार कर सकते है परंतु कोड परिवर्तन में स्थिति इसके विपरीत होती है कोड परिवर्तन में प्रयोक्ता को दो या दो से अधिक भाषा का पूर्ण ज्ञान हो तभी वह अपने संप्रेषण में प्रयोग कर सकता है। कोड मिश्रण की प्रक्रिया कभी कभी अनायास हो जाती है चुकी जो चीजे अर्थात जिस शब्द के एक से दूसरे कोड का अर्थ पता होता है तो हमें उस शब्द के प्रयोग में उसी कोड को इस्तेमाल करने की आदत हो जाती है जो हमारी मस्तिष्क में पूरी तरह से समायें हुए है। परंतु कोड परिवर्तन में यह प्रक्रिया इस प्रकार नहीं हो सकती, क्योंकि किसी भी भाषा को प्रोक्ति स्तर पर अभिव्यक्त करने के लिए उसकी सोची समझी अभिव्यक्ति जरुरी होती है क्योंकि कोड मिश्रण की तुलना में कोड परिवर्तन के शब्दों की रचना व्यवस्था एवं प्रक्रिया दोनों ही बड़ी होती है इसलिए कोड मिश्रण की भांति परिवर्तन न तो अनायास ही हो सकता है और न ही आदत के रूप में हम उसे मान सकते है। जैसे आजकल हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रित रूप सामान्यतः हर व्यक्ति प्रयोग करते हुए दिख सकता है जिसे हमने हिंगलिश जैसा नाम दिया है।

कोड मिश्रण तथा कोड परिवर्तन में कोई विशेष अंतर नहीं है बल्कि बहुत ही सूक्ष्म अंतर है ये दोनों हिउ क्रियाएँ बहुभाषिक समुदाय की देन है। कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन सामाजिक अर्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम है कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन भाषा प्रयोक्ता के सामाजिक स्तर पर बहुत कुछ निर्भर करता है। कोड मिश्रण वाक्य स्तर होता है क्योंकि प्रोक्ति हमेशा एक वाक्य की हो ऐसा संभव नहीं है और यदि प्रोक्ति एक ही वाक्य की है और उसमे दो भाषाओं की इकाइयों का प्रयोग हुआ है तो उसे हम भाषा(कोड)मिश्रण मान सकते है। दूसरा कारण है कि भाषा प्रयोक्ता दो भाषाओं के उपवाक्यों को किसी भाषा के समुच्चय बोधक शब्द से जोड़कर सयुक्त अथवा मिश्रित वाक्य भले ही किसी एक भाषा का न

रहे। लेकिन वह इकाई के रूप से इस प्रकार से समाहित रहता है कि वह उन दोनों कोडों से अलग अलग एक नए कोड का निर्माण करता है।

कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन भाषा रूप का ऐसा उदाहरण नहीं है जो उसके प्रयोग करने वालेकी बाध्यता को प्रदर्शित करता हो बल्कि ये दोनों ही प्रक्रियाएं नियमित और निश्चित रूप से किसी भी द्विभाषिक समुदाय मे संप्रेषण तत्व के रूप रहती है। और मानक भाषा व्याकरणिक तत्वों के विरोध में इन्हें रखा जा सकता है कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन दोनों ही किसी भाषा के मानक रूप का विरोध करता है तथा मानकता के तत्वों को तोड़ता है। कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन द्वारा प्रयोक्ता एक निश्चित भाषा प्रयोग करने वाला मिश्रित कोड का प्रयोग करता है। जो प्रयोग के समय उसके विचार विनिमय तथा संप्रेषण व्यवस्था को सुचारू रूप से व्यवहरत करने के लिए एक विशिष्ट भाषा के समुदाय में , स्वतंत्र कोड के रूप में स्वीकार किया जाता है।

ऐसा नहीं है कि प्रयोक्ता बिना किसी संदर्भ और परिस्थिति की स्वीकार्यता के मिश्रित कोड का प्रयोग करता हो अथवा एक कोड से दूसरे कोड पर परिवर्तित हो जाये। यदि ऐसा प्रयोक्ता द्वारा न हो तो वह अपनी अभिव्यक्ति को संप्रेषित कर पायेगा और साथ ही वह मजाक या प्रताड़ना का शिकार या पत्र भी बन जायेगा।

समग्र रूप में यह कहा जा सकता है कि कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन आधुनिक समाज में प्रचलित एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त माध्यम के रूप में विकसित है। कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन समाज में तब से हो सकता है जब से मानव ने संप्रेषण व्यवस्था की शुरुआत की होगी क्योंकि कहा गया है कि चार कोश पर वाणी बदल जाती है अर्थात हर अलग अलग समाज की अपनी भाषा होती है और वह अगर अन्य समाज से संप्रेषण व्यव्स्था स्थापित करता है तो स्वाभाविक रूप से मिश्रण और परिवर्तन की स्थिति सदैव बनी रही होगी।

तृतीय-अध्याय

3. कोड मिश्रण के स्तर

"सैद्धांतिक धरातल पर कोड मिश्रण भाषा के चार स्तरों पर होता है –इकाई के स्तर पर, वाक्य के स्तर पर, मुहावरे के स्तर पर, और इकाई संकरता के स्तर पर। "(भाषा का संसार –सिंह,दिलीप -150) हिंदी के साथ कई बोलियों के शब्द का मिश्रण भी देखने को मिलता है लेकिन भाषा के रूप में सबसे अधिक मिश्रण हिंदी – अंग्रेजी, हिंदी –अरबीफारसी का प्रयोग होता है। इकाई मिश्रण के रूप में हिंदी में भोजपुरी के कई उदाहरण देखे जा सकते है जैसे – लतियाना , बतियाना ,खजुआना , अगोरना, नेवताना,जोहना आदि। इसी प्रकार – का हुआ, कौनो ठीक नहीं है, आदि जैसे प्रयोग भी लोग सरलता से करते है।

भाषा के विभिन्न स्तरों पर कोड मिश्रण की स्थिति देखने को मिलती है। किसी एक भाषा कीविभिन्न कोशीय व व्याकरणिक इकाईयां दूसरी भाषा मे विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार मिश्रित होती रहती है और किसी नए कोड को जन्म देती है। कोड मिश्रणकी प्रक्रिया निम्नांकित स्तरों पर हो सकती है।

3.1 शाब्दिक इकाइयों के स्तर पर-

भाषा व्यवहार के समय जब एक भाषा मे दूसरी भाषा की जो शाब्दिक इकाइयां मिश्रित होती हैं तो भाषा का जो रूप देखने को मिलता है वो कोड मिश्रण की प्रक्रिया का परिणाम होता है ।शाब्दिक इकाइयों को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

3.1.1 नामकरण से संबंधित शब्दावली-

संबंधों के नाम भी कोड मिश्रण की स्थिति उत्पन्न करते हैं जैसे- मोम, मदर,फादर,डेडी, वाइफ, हसबेंड, अंकल,सिस्टर,कज़िन, ब्रदर,ईनलॉज, आदि।

इन सभी शाब्दिक इकाइयों के हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बहुत सहजता से प्रयोग किया जाता है उदाहरण के लिए -

- "तुम्हारे इनलॉज कैसे हैं?"

- "मेरा ब्रदर मेरे अंकल के साथ रहता है"

- "मेरे हसवेंड कल अपनी सिस्टर और नेफ्यू के साथ मॉर्निंग में देल्ही जा रहे हैं।"

3.2 पदनाम के स्तर पर-जब वक्ता अपने मुख्य भाषा में दूसर कोड के पदनाम का प्रयोग करता है तो मुख्य भाषा में अन्य भाषा के पदनाम कोड मिश्रण के रूप में जाने जाते हैं । जैसे- प्रोफेसर, प्रिंसिपल, सेक्रेटरी, मजिस्ट्रेट, प्राइम मिनिस्टर, मैनेजर, रीडर आदि । सभी पदनाम अंग्रेजी भाषा के हैं जिनका प्रयोग हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में निरंतर किया जाता है उदाहरण के लिए-

4 "डायरेक्टर साहब और रजिस्ट्रार दोनों छुट्टी पर हैं।"

5 "तुम्हारे स्कूल की प्रिंसिपल का नेम क्या है?"

6 "मजिस्ट्रेट साहब के घर कल पार्टी है"

7 "एकाउंट्स ऑफिसर से एक मेडिकल बिल बनवा कर लाना पड़ेगा"

इनके अतिरिक्त - स्टेशन, हॉस्पिटल, यूनिवर्सिटी, शॉप ,मार्किट बूथ ,बिल्डिंग, टर्मिनल, क्रॉसिंग आदि कई शब्द हिंदी में प्रयोग किये जा रहे हैं। उदाहरण-"दिल्ली में मल्टीस्टोरी बिल्डिंग अब बहुत बन गए हैं।"

"आज हम फाइव स्टार होटल में जाएंगे।"

"हाईवे के पास कोई बस टर्मिनल नहीं है।"

"पोस्ट ऑफिस और स्टेडियम दोनों पास में ही हैं।"

"रोड हमेशा ज़ेब्रा क्रॉसिंग से ही क्रॉस करना चाहिए।"

"कॉलेज के पास जो बस स्टैंड है वहाँ बसों की सर्विस अच्छी है।"

"रेलवे स्टेशन पर काउंटर से टिकट लेना होगा।"

"यहाँ पर मेडिकल की शॉप थी ।"

3.2.1 आदर सूचक शब्द और उपाधि :- व्यक्ति जब अपनी वार्तालाप के दौरान किसी को विशेष आदर /सम्मान देने के लिए तथा विशिष्ट उपाधि प्रदान करने के लिए भी कोड मिश्रण करता है। उदाहरणार्थ -

“मिस्टर रितेश आज दिल्ली जाएंगे ।”

“मिस वर्ल्ड का ऑडिशन हो रहा है।”

“मिसिज़ पाठक बहुत बयूटीफुल हैं।”

इन आदर सूचक शब्दो के अतिरिक्त डॉक्टर साहब,प्रिसिंपल मैम ,डायरेक्टर साहब ,एच. ओ.डी. सर आदि उपाधि भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में मिश्रण होतीं हैं।

3.2.2 समय को व्यक्त करने के लिए :-

भाषा प्रयोक्ता समय या अवधि को व्यक्त करने के लिए दिनों के नाम- संडे ,मंडे ...फ्राइडे आदि केमिश्रण के साथ नेक्स्ट मंथ ,नेक्स्ट ईयर, लास्ट ईयर, लास्ट न्यू ईयर आदि का भी प्रयोग करता है साथ ही ऐसे मिश्रण भी होते हैं जिनमे पूरी इकाई में एक अंश एक भाषा का होता है और दूसरा अंश दूसरी भाषा का यथा - अगले संडे ,अगले मंडे, अगले मंथ, पिछला वीक,पिछला ईयर,मंडे शाम, नाइट में आदि ।

“नेक्स्ट मंडे हम मूवी देखने जाएंगे।”

“लास्ट ईयर हमने उसके बर्थडे पर थ्री थाउजेंड का गिफ़्ट दिया था।”

अभिवादन के शब्द:- किसी अन्य भाषा के अभिवादन के शब्द भी कोड मिश्रण में प्रयुक्त होते हैं हिंदी में अभिवादन से सम्बंधित शब्द सबसे ज्यादा अंग्रेजी भाषा से लिए जाते हैं जैसे - हाय, हेलो, बाय, टाटा,सी यू ,गुडमार्निंग, गुडईवनिंग,गुड आफ्टरनून, गुड नाईट,वेलकम, तसरीफ(उर्दू) आदि।

अभिवादन के शब्दों का प्रयोग हम एक उदाहरण द्वारा देख सकते हैं-

रितेश - हेलो मिस रश्मि

रश्मि - हेलो

रितेश - कैसी हैं आप ?

रश्मि - आई एम फाइन,हाऊ आर यू ?

रितेश -गुड।

रश्मि - कहाँ जा रहे हो?

रितेश - मूवी

रश्मि - ओ.के ,बाय

रितेश - चलोगी तुम भी?

रश्मि - नो नो मुझे बहुत इम्पोरटेंट काम है।

रितेश - ओ.के. टाटा ,सी यू।

" गुड मॉर्निंग क्या हाल है ?"

"ओ.के.बाय गुड नाईट।"

अभिवादन के अतिरिक्त दुःख, क्षोभ ,गलती या आश्चर्य जताने तथा बधाई देने आदि के लिए भी कोड मिश्रण किया जाता है और सॉरी ,थैंक्स ,प्लीज़, कॉंग्रेचुलेसन आदि अंग्रेजी के शब्द हिंदी में सामान्य हो गए हैं जैसे -

" सॉरी मैंने आपको देखा नहीं।"

"थैंक्यूअब आप जा सकते हैं ।"

"प्लीज आप ये वहाँ रख दीजिए ।"

"ओ वाव कॉंग्रेचुलेसन आपके नम्बर तो बहुत अच्छे हैं।"

3.2.3 घरेलू वस्तुओं के नाम से सम्बंधित शब्द तथा वस्तुएँ :-आजकल कोड मिश्रण की प्रक्रिया में केवल कुछ ही शब्दों के स्तर पर नहीं बल्कि सभी क्षेत्रो से सम्बंधित शब्दों का प्रयोग होता है। आधुनिक संसाधनों के नाम अधिकतर अंग्रेजी या अन्य भाषा से जैसे हैं वैसे ही उठा लिए जाते हैं। जैसे- सीलिंग फेन ,रेडियों ,टेबल फेन ,ट्रांजिस्टर ,टेबल, आयरन , टी.वी ,चेयर ,लैम्प ,हीटर,जग,कूलर,ग्लास,ओवनर, ड्रेस, टोस्टर, प्रेशर कुकर, बैड , करटन, कप, ट्रे आदि शब्दों का सभी घरों में आमतौर पर अत्यधिक प्रयोग होता है।

3.2.4 खेल व मनोरंजन की वस्तुओं के नाम :- बेट,बौल,टीम,चांस,स्कोर,शॉट,विकेट,स्ट्रोक,गोल,रन ,कैच,सिनेमा,स्टेज,स्क्रीन,एक्टिंग,कॉमेडी,फिल्म,प्ले,ट्रेजडी,नोवल,स्टोरी, डांस,स्पोर्ट्स,म्यूजिक,डिस्को डांस, चैम्पियन।

3.2.5 विज्ञान एवं तकनीकी से सम्बंधित शब्दावली :- वर्तमान युग विज्ञान की क्रांति का युग है। प्रत्येक दिन किसी न किसी नई वस्तु की खोज होते रहना स्वाभाविक है। विज्ञान एवं तकनीकी से सम्बंधित शब्दावली उनके मूल रूप में ही हिंदी तथा अन्य भाषाओं में प्रयुक्त कर लिए जाते है। कई बार तो ऐसा भी होता है कि उनके भिन्न अर्थों वाले शब्द उनकी अपनी भाषा में भी प्रचलित हो जाते है जैसे :- हेलीकाप्टर, जैट, ऐरोप्लन, एयर बस , एयर पोर्ट ,मिसाइल, राकेट , लेब, ओपरेशन, इंजेक्शन, बल्ब,ट्यूब आदि कई शब्द हिंदी में प्रयोग हो रहे है। वर्तमान समय में सभी आवागमन के साधनों के नाम अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में रखे जाते है। हिंदी तथा अन्य भाषाओं में भी उनका प्रयोग उसी रूप में होता है।

"आजकल का जमाना टेक्नोलॉजीका जमाना है। "

"इसरो ने कई रॉकेट का सफल परिक्षण किया है। "

"आज कल के बड़े बड़े नेता अपना प्राइवेट जैट रखते है। "

"पेसेंट अभी ऑपरेशन थिएटर में है। "

3.2.6 **व्यापर तथा वाणिज्य से संबंद्धित शब्दावली** :-बैंक ,अकाउंट ,सेल्स कॉस्ट,टर्न ओवर ,

मार्किट , प्रोडक्सन,रेट, स्टॉक , डिपोजिट, डेबिट,डिलीवरी, क्रेडिट ,चेक,लाइसेंस, ड्राफ्ट । आदि शब्दावलियों का प्रयोग प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में करता है। जैसे :-

"विश्वविद्यालय आवेदन फॉर्म को भरने के लिए बैंक से ड्राफ्ट बनवाना पड़ेगा। "

"इस साल कम्पनी का टर्न ओवर पिछले साल की अपेक्षा अधिक है। "

"इस व्यापार के लिए पहले गोवरमेंट से लाइसेंस लेना पड़ेगा। "

3.2.7 प्रशासन तथा कानून से सम्बंधित शब्दावली :- भाषा के दो रूप देखने को मिलते है – औपचारिक तथा अनौपचारिक । कार्यालयों में दोनों प्रकार की भाषा का प्रयोग करते कार्यालय पद ,फाइल व कार्यालय से सम्बंधित अन्य शब्दावालियों का प्रयोग कोड मिश्रण के रूप में होता है। जैसे –

"लेटर पोस्ट करने की लास्ट डेट थर्ड जनवरी है। "

"आपका ऑर्डर डिस्पैच हो गया है। "

"कम्प्लेंट की रिसीविंग कहाँ है ?"

"कोंट्रेक्ट साइन करने से पहले एप्लीकेशन भरना होगा। "

- एक कोड में दूसरे कोड के विशेषणों का मिश्रण :- एक कोड से दूसरे कोड में आने वाले विशेषणों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है –

  पहला वर्ग उन विशेषणों का है जो अंग्रेजी संज्ञाओं के पहले ही आते हैं। यह वर्ग अपवाद मन जा सकता है आमतौर पर इसे विशेषण शायद नहीं मिलते। जैसे –ज़जीकलमामला,रिलिजियसबात, एडिसनलसेक्रेटरी,ज़जीकल मजिस्ट्रेट,मेडिकल डिग्री,क्रिटिकल कंडीशन,चार्मिंग फेस,रिलिजियस सेरेमनी आदि।

  दूसर वर्ग के अंतर्गत वे विशेषण आते हैं जिनका प्रयोग हिंदी व् अंग्रेजी दोनों भाषओं के पहले होता है। यथा-

  कॉमिक सीन -कॉमिक दृश्य

ट्रेजिक कंडिशन – ट्रेजिक दशा

प्राइमरी एड्यूकेशन – प्राइमरी शिक्षा

ब्यूटीफुल गर्ल – ब्यूटीफुल लड़की

हिंदी से अंग्रेजी प्रत्यय का मिश्रण :- प्रत्यय के स्तर पर भी मिश्रण देखा जा सकता है। जैसे -

जैन +ईज्म = जेनिजम

सिखिजम

हिंदूइज्म

बुद्ध +इस्ट = बुद्धिस्ट

संनातनिष्ट

नक्सल +आइट = नक्सलाइट

प्रतिध्वन्यात्मक शब्द का मिश्रण :-

पेट्रोल- वेट्रोल

टी.वी. –वी.वी.

चेयर – वेयर

पिक्चर – विक्चर

मार्किट –वार्किट

पोयट्री – वोयट्री

रेडियों – वेडियों

पेपर – वेपर

टेबल –वेबल

3.3 पदबंधीय स्तर पर कोड मिश्रण :-

पदबंध के स्तर पर भी कोड मिश्रण की प्रक्रिया घटित होती है। इसमें क्रिया और विशेषण अंग्रेजी तथा अन्य भाषा के और संज्ञा आदि हिंदी की हो सकती है। जैसे –

3.3.1 क्रिया के स्तर पर :-

अंग्रेजी –क्रिया + हिंदी- करना

एक्टिंग करना ,ड्रामा करना

इम्प्रूवमेंट करना ,डिस्कशन करना

एड्जेस्टमेंट करना, पुल करना

पुश करना ,ड्राइव करना, इंटरटेन करना आदि।

3.3.2 विशेषण के स्तर पर :-

अंग्रेजी का विशेषण और हिंदी – करना

मोटिवेट करना, स्लो करना

फास्ट करना, शार्प करना

इक्वल करना ,फ्रस्टेट करना आदि।

3.3.3 विशेषण और संज्ञा के स्तर पर :-

अंग्रेजी का विशेषण और हिंदी की संज्ञा

लोकल माल ,इंटरटेनिंग कहानी

इंट्रेस्टिंग लड़की ,हैंडसम लड़का

वोरिंग शहर , फैटी लड़की आदि।

3.3.4 हिंदी का विशेषण और अंग्रेजी की संज्ञा :-

सुंदर डिजाइन ,बढ़िया लोकेशन

मजबूत फर्नीचर, अच्छी ऐक्ट्रेस

सुंदर पेंटिंग, तेज स्पीड

बुद्धिमान स्टूडेंट्स आदि।

3.4 संयुक्त क्रिया के स्तर पर मिश्रण :-

अंग्रेजी की क्रिया व हिंदी का 'करना'

कम्प्लेंट करना,डिसमिस करना

कम्प्लीट करना,ससपेंड करना

अंग्रेजी की संज्ञा और हिंदी की क्रिया (देना ,लेना)

परमिशन देना ,लेक्चर देना

3.5 उपवाक्य के स्तर पर कोड मिश्रण :-

अंग्रेजी की propositional phrases का मिश्रण

"यू आर श्योर वह नहीं आयेगा ?"

"आई थिंक हमें अब चलना चाहिए। "

अपनी बात पर बल देने के लिए दूसरे कोड के वाक्यों को दोहराने की प्रवृति भी कोड मिश्रण का कारण बनती है जैसे-

"तुम जा सकते हो,यू केन गो ."

"बिलकुल शोर नहीं होना चाहिए , पिन ड्रॉप साइलेंस ."

“हमें देरी हो रही है ,वी आर गेटिंग लेट .”

“बहुत बहुत बधाई हो,कांग्रेचुलेसन .”

संबंध सूचक वाक्यों का एक कोड से दूसर कोड में मिश्रण :-

“देट कार जो वहाँ खड़ी है इज माइन। ”

दूसर कोड के मुहावरों और लोकोक्तियों का मिश्रण :-

“आप तो जानते ही है यूथ इज बलंडर”

“जो जैसा करेगा उसके साथ वैसा ही होगा टिट फॉर टेट”

3.6 संयुक्त उपवाक्य के स्तर पर मिश्रण

“मैं वहाँ गया बट ही इज नॉट देयर”

“मैंने उसे बोला दैट ही वास लेट”

उसने मेरे गिफ्ट को देख कर बोला कि वाट ए लवली प्रजेंट”(भाषा और समाज –सिंह,भरत ,72)

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कोड मिश्रण वाक्य के लगभग प्रत्येक स्तर पर देखा जा सकता है। लेकीन इसका यह तात्पर्य नहीं कि हम जैसे चाहे वैसे मिश्रण कर लें। कोड मिश्रण की प्रक्रिया मनमाने ढंग से नहीं चलती है इसके कुछ प्रतिबन्ध भी होते है। यह प्रतिबन्ध ही कोड मिश्रण की अवधारणा को सामाजिक प्रयोग तथा भाषा व्यवहार के नियमों में पिरोता है। कोड मिश्रण के प्रतिबन्ध उसे इस योग्य बनाते है कि वह भाषा व्यवहार के समय संप्रेषण का सशक्त माध्यम बन सके। कोड मिश्रण से सम्बंधित कुछ प्रतिबन्ध निम्नांकित हैं –

1.एक भाषा के वाक्य में दुसरी भाषा का उपवाक्य मान्य नहीं है :

“वह लड़की, हूम यूमेट यस्टरडे, उसकी शादी होने वाली है। ”

2.एक भाषा के दो वाक्यों के बीच दूसरी भाषा के संयोजक मानी नहीं है

“मैं जाना चाहता था बटजा नहीं पाया। ”

3.एक भाषा के उपवाक्य के बाद दूसरी भाषा के उपवाक्य में समुच्चय बोधक दूसरी भाषा का ही होना चाहिए।

कल तुम समय से नहीं आए देन आई विल टर्न यू आइट(मान्य), कल तुम समय से नहीं आए तो आई विलटर्न यू आइट(अमान्य)

4. हिंदी के वाक्यों में अंग्रेजी के निर्धारक , क्रमसूचक , संख्या सूचक का प्रयोग अमान्य है।

“दैट बच्चा बेवकूफ है। ”

“फर्स्ट वाला लड़का अच्छा है। ”

“नाइन लोग चल रहे है अपने साथ। ”(भाषा का संसार –सिंह ,दिलीप -150)

उपर्युक्त प्रतिबन्ध यह स्पष्ट करते है कि कोड मिश्रण परिवर्तन के लिए व्कुछ निश्चित भाषिक स्थितियाँ होती है जिनमे कोड-1 , कोड -2 का मिश्रण किया जाता है । इन भाषिक स्थितियों के अनुरूप ही आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में हमे हिंदी – अंग्रेजी कोड मिश्रण के सम्पूर्ण रूप देखने को मिलते है । कथा साहित्य के साथ- साथ हिंदी पत्रिकारिता , खासकर विज्ञापनों में अंग्रेजी – हिंदी कोड मिश्रण हिंदी भाषा के समुदाय द्वारा एक बहुत ही सामान्य घटना बन चुका है। इसे भी एक रोचक तथ्य मन जा सकता है कि बीते कुछ वर्षो से भारत की अंग्रेजी पत्रकारिता में भी हिंदी कोड मिश्रण की प्रवृति बढ़ी है। यह ये प्रमाणित करता है कि अंग्रेजी पत्रकारिता भी संप्रेषण के समुचित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिंदी के प्रयोग द्वारा एक नए कोड के निर्माण से हिचक नहीं रही है। ‘इंडिया टूडे’ और ‘फिल्मफेयर’ जैसी लब्ध प्रतिष्ठित पत्रिकाओं से कुछ उदाहरण निम्न है।

आई बेकेम तगड़ा, आई डोंट हैव अन्य घमंड।

फॉर हिज खानदानी इज्जत।

आलवेज ड्रेस्ड इन सीधा पल्लू कॉटन साड़ी।

शी जस्ट टेक्स द नार्मल दाल, चावल, एंड सब्जी।

अच्छा , तो यू आर टॉकिंग अबाउट शाहिद, बहुत होसियार है आप लोग।

फैन्सीकपड़ो, सौदर्य प्रसाधनो, कारों आदि के विज्ञापनों में भी कोड परिवर्तन और कोड मिश्रण की प्रवृति बढती जा रही है जहाँ रोमन लिपि में लिखकर हिंदी प्रयोग से मिश्रित अंग्रेजी का एक अलग ही स्वरुप बनता जाता है। अंग्रेजी अखबारों के समाचारों में भी अब यह प्रवृति दिखाई देने लगी है। इन प्रवृतियों ने अब एक और स्थिति को भी जन्म दिया है – समाचारों में नेताओं आदि के हिंदी कथन को रोमन लिपि में लिखकर कोष्ठक में उसका अंग्रेजी अनुवाद देना आज की अंग्रेजी पत्रकारिता ने स्वीकार कर लिया है। (भाषा का संसार –सिंह ,दिलीप -151)

अतः देखा जा सकता है कि कोड मिश्रण एक समाज संदर्भित प्रक्रिया के साथ साथ कुछ नियमों से भी बंधी है। मिश्रण की यह प्रक्रिया किसी भी स्तर पर हो लेकिन उसका समाज द्वारा मान्य होना तथा सामाजिक अर्थो से संदर्भित होना आवश्यक होता है। कोड मिश्रण करने वाला प्रयोक्ता यह मन कर चलता है कि कोड मिश्रण द्वारा उसे संप्रेषण में आसानी होगी तथा बातों में स्पष्ट भी आयेगी। कोई भी व्यक्ति हवा में कोड मिश्रण नहीं कर लेता उसके पीछे कोई न कोई कारण जरुर होता है जिसके पूर्ति के लिए वह प्रयोक्ता कोड मिश्रण की प्रक्रिया को अपनाता है।

चतुर्थ-अध्याय

4. कोड मिश्रण और हिंदी कहानी : सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

कोड मिश्रण संप्रेषण अथवा लेखन व्यवस्था में द्विभाषिक अथवा वहुभाषिक स्थिति के आधार पर उत्पन्न होता है। कोड मिश्रण से आशय है- एक भाषा में अन्य भाषओं के शब्दादि के मिश्रण। यह मिश्रण वाक्यके अंतर्गत पदबंध तथा उपवाक्य आदि के स्तर पर होता है। जैसे – कल जो एग्जाम हुआ था उसका रिजल्ट नेक्स्ट मंथ आयेगा।

कोड मिश्रण वहुभाषिक समुदाय का भाषा व्यवहार परिस्थिति, प्रतिभागी के संबंध प्रतिभागी का सामाजिक, आर्थिक व शैक्षिक आदि स्तर व विषय आदि पर भी आद्फ्हरित होता है। जिसके परिणाम स्वरूप उसके भाषा व्यवहार में एक से अधिक भाषाओं के बीच संसरण अथवा मिश्रित प्रयोग की स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है। एक से अधिक भाषाओं की आवश्यकनुसार इस मिश्रित प्रयोग को ही कोड मिश्रण कहा जाता है। और कोड मिश्रण की इस प्रक्रिया में समाज और मनोवैज्ञानिक का अहम भूमिका होती है। क्योंकी कोड मिश्रण की स्थिति समाज और मनोविज्ञान से ही उत्पन्न होती है। चाहे वह सामाजिक प्रतिष्ठा उसका कारण है या आदत या शिक्षा जिसके वजह से वक्ता अपने संप्रेषक और लेखन में कोड मिश्रण करता है। कोड मिश्रण के कारण को दो भागों में विभाजित किया गया है। जिसमें एक सामाजिक कारण है और दूसरा मनोवैज्ञानिक कारण है। जिसकी विस्तृत जानकारी दूसर अध्याय में दिया गया है।

कहानी की संकल्पना बहुत प्राचीन है भले ही लेखन की विधा के रूप बाद में उभरी हो किन्तु इसका वजूद आरम्भ से है। प्राचीन काल में कहनी, कथा कहने का प्रचालन था आज भी कहानी सबसे रोचक और प्रसिद्ध विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। इस्में मानव जीवन के किसी पक्ष का बड़ी रोचकता और मार्मिकता से चित्रण किया जाता है।

कहानी की रचना के तत्व समाज के सभी समस्याओं को अपने में समाहित करने है। कहानी की रचना के तत्व एक व्यापक समाज की कल्पना करते।

1) कथानक (वस्तुया प्लाट)
2) चरित्र (पात्र)
3) संवाद (कथोपकथन
4) देशकाल
5) शैली
6) उदेश्य

इस प्रकार कहानी एक ऐसी विधा है जिसमें समाज और समाज में मनोविज्ञान विद्यमान रहता है। कहानी को हम एक सामाजिक समस्याओं तथा घटनाओं के प्रस्तुति का दस्तावेज़ कह सकते है। कहानी के समस्या और धारणा समाज संदर्भित होता है। क्योंकि मनोविज्ञान के माध्यम से ही समाज में समस्या एवं घटनाएँ घटित होती है। और यह पूरी प्रक्रिया किसी न किसी भाषा के माध्यम से गुजरती है। यह सम्पन्न होती है। इसलिए भाषा, कथा साहित्य, समाज और मनोविज्ञान का संबंध अन्योंविज्ञान है।

कहानी में कोड मिश्रण समाज और मनोविज्ञान की स्थिति परिस्थिति पर निर्भर करता है। कहानी में जब कोई पत्र संवाद स्थापित करता है तो सबसे पहले उसकी सामाजिक एवं मनोविज्ञानिक स्थिति परिस्थिति उसपर आरोपित होती है। क्योंकी भाषा संप्रेषण में वृद्धि और समाज का मुख्य योगदान होता है। यहा वृद्धि और समाज से संदर्भ है शिक्षा और अशिक्षा से। अगर पत्र पढ़ा लिखा शिक्षित होता संवाद में एक विशेष तरह का भाषायी प्रयोग होता है। उस शिक्षित पत्र के संप्रेषण में तथा हम आशा भी रखते है की शिक्षित पात्र भाषायी स्तर पर भाषा का प्रयोग शुद्ध एवं परिनिश्चित व्यवस्था के अंतगर्त करेगा।

इसलिए साहित्यकर अपने पत्रों की सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक निक स्थिति अनुसार संवाद योजना का निर्माण करता है। कोड मिश्रण के संदर्भ में आवश्यक नहीं होता है कि वह एक से अधिक भाषओं में पर्याप्त जानकारी रखता हो ,सामान्य जानकारी के आधार पर भी कोड मिश्रण की प्रक्रिया होती है ।

समग्र रूप में यह कहा जा सकता है कि कहानी में कोड मिश्रण, समाज और मनोविज्ञान के द्वारा स्थिति और समस्या संदर्भ के साथ होती है।

4.1 कोड मिश्रण : साहित्य, समाज और मनोविज्ञान

4.1.1 कोड मिश्रण और हिंदी कहानी

साहित्य का शाब्दिक अर्थ है जिसमे सबका हित हो। साहित्य जनता की चितवृति का सामाजिक चिंतन तथा चिंतन का विकास है। साहित्य को मूलतः शाब्दिक कला माना जाता है। क्योंकिशब्द का विशिष्ट प्रयोग ही कला के मूल स्रोत साहित्य का संदर्भजनित संसार भाषा में रूपांतरबद्ध होता है। साहित्य का यह अंतरनिर्हित संसार किसी अन्य अर्थ की अनुकृति न होकर स्वयं अपना संसार होता है। साहित्यकार एक व्यक्ति रूप में बाह्य संदर्भों से मुक्त होकर भी उन संदर्भों को एक संभावित यथार्थ के रूप में सृजित करता है। इस संदर्भ सृजन से बना संसार काल और स्थान की सीमाओं को तोड़ता है। यह न तो सिर्फ स्वायत है बल्कि यह अपने आप में जीवंत और बहुआयामी भी होता है। इस साहित्य संसार से सम्पन्न विषयवस्तु भाषा के माध्यम से नहीं बल्कि भाषा के भीतर रहकर अपनी जीवन सत्ता की धारण करती।

जिस प्रकार साहित्य भाषिक प्रतीक की भाति अर्थ और अभिव्यक्ति की सामूहिक इकाई के रूप में सिद्ध होता है। उसी प्रकार साहित्य रचना का संसार भाषापरक रहता है। इस भाषा की सृजनात्मक शक्ति का अध्ययन शैली विज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है।साहित्य का समाज और मनोविज्ञान के साथ अंतरग संबंध हैं क्योंकि कोई भी साहित्यअपने समाज का प्रतिबिम्ब होता है तथा किसी भी साहित्य कासृजन अपने समाज के भीतर संपन होता है इसलिएसाहित्य परसमाज का गहरा प्रभाव रहता हैं और समाज मानव से मिलकर बनता हैं वैसे तो समाज मानवेतर प्राणियों का भी होता है परंतु उनकासाहित्य नहीं है इसके पीछे एक ही कारण है ज्ञान अर्थात मनोविज्ञान।

चूँकि मानव एक प्रबुद्ध प्राणी है जो अपने समाजको अपने ज्ञान द्वारा संचालित करता है जबकि मानवेतर प्राणीऐसा नहीं कर सकते। साहित्य समाज का दर्पण होता है। यह एक सर्वमान्य धारणा हैइसके पीछे शायद यह तर्क है की साहित्य अपने समाज में हो रहीतमाम घटनाओं को संज्ञानात्मक ज्ञान के अध्ययन

से समाज केसामने प्रदर्शित करता है एवं उसके निदान का मार्ग भी दिखता है। और इस सबके पीछे मानव का ज्ञान काम करता है जो मनोविज्ञानका एक पक्ष हैजब कोई साहित्यकार अपने समाज में घटित घटनाओं कोअपने मनोवैज्ञानिक संज्ञानो के द्वारा समाज में प्रदर्शित करता हैतब वह साहित्य समाज और मनोविज्ञान तीनों का एक साथ श्रोतावर्ग के या पाठक वर्ग के सामने परोसता हैं और इस क्रम में वहअपनी बातो को स्पष्टता पूर्वक श्रोता तक पहुचने के लिए समाजऔर मनोविज्ञान दोनों का सहारा लेता हैं तथा संपेषण के इस क्रम में मुख्यभूमिका में भाषा रहती है जिसका साहित्यकार पूर्ण रूप से प्रयोगकरता है अपनी बातो की स्पष्टता पहुंचता है या कोशिश करता है। जिससे रचना में सदैव दूसरी भाषा के शब्दादि के अजाने से कोड मिश्रण की स्थिति बनी रहती है।

साहित्य, समाज और मनोविज्ञान इस तीनों का संबंध भाषा सेगहरे रूप से जुड़ा है. क्योंकि समाज वह भाषिक इकाई है। जिसमे कोई समुदाय या समूह अपने आचार- विचार, भाषा, रहन-सहन, वेश-भूषा या मानव की जितनी भी अभिव्यक्ति और आवश्यकता होतीहै,वह किसी न किसी समाज के भीतर संपन्न करता है। समाज मेंजब व्यक्ति वार्तालाप करते है। अपने भावो या विचारों को व्यक्तकरने के लिए तो वह किसी न किसी भाषा में ही सहारा लेते हैं। समाज के अंतर्गत साहित्य आता हैं और साहित्यकारके अंतर्गत मनोविज्ञान चूँकि मनोविज्ञान का संबंध मानव से हैं और साहित्यकार मानव हैं जो समाज में रहता है। इस प्रकार साहित्य, समाज और मनोविज्ञान आपस मेंइस प्रकार जुड़े हुए हैं कि एक के भी आभाव में जीवन असंभव सा है मनुष्य के सामाजिक व्यवहार को समझाने का प्रयास सृष्टिके रचना के साथ ही माना जा सकता हैं मानव के सामाजिकव्यवहार को जानने और उसे स्पष्ट करने एवं उसके कारणों को निश्चितकरने का प्रत्यन करना आदिकाल से होता आ रहा है परंतु जहाँतक इसके मनोवैज्ञानिक अध्ययन का प्रश्न है। वह बीसवीं शताब्दी से ही संभव हुआ। प्लेटो का मानना है कि "मनुष्य का व्यवहार उसकी सामाजिक परिस्थितियों का परिणाम होता है। "हीगल ने व्यक्ति के व्यवहार को उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि के संबंध में समझने पर बल दिया। सामाजिक मनोविज्ञान भी एक विज्ञान है। इसमें सामाजिक परिस्थिति में व्यक्ति के स्वरुप, व्यवहार एवं अनुभवआदि का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान का संबंध मानव मन के तथा मानव द्वारा कियेगए कार्यकलाप के अध्ययन से है। मनोविज्ञान मानव के मस्तिष्क का अध्ययन करता है और किसी भी मानव के मस्तिष्कमें भाषा व समाज का अमूर्त रूप

विद्यमान रहता हैभाषा और समाज का मनोविज्ञान सेगहरा रिश्ता हैं। चूँकि ये सभी क्रियाएँ पहले मानव मन में घटितहोती है। भाषा हमारे मस्तिष्क में दायी तरफ विद्यमान रहता हैजिसका हम संज्ञानात्मक मनोविज्ञान के अंतर्गत अध्ययन करते हैं। साहित्य, समाज और मनोविज्ञान के द्वारा हीसमाज कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन की स्थिति बनी रहती है किसी भी समाजका साहित्य बहुआयामी होता हैं। उसमे समाज की विभिन्नइकाइयों का उद्घाटन रहता है। क्योंकि साहित्यकारजब साहित्यसृजन करता है तब उसकी कोशिश रहती है कि वह समाज में व्याप्तसमस्याओं को सूक्ष्म स्तर से लेकर उद्घाटित करें। इस क्रम में वहसमाज के छोटे से छोटे व्यक्ति , जाति , समुदाय, को अपने साहित्यका नायक बनाता हैं तथा समाज में जो समस्याएँ हैं चाहे वह महाजनी व्यवस्था या सामंती व्यवस्था, सभी स्तरो पर दिखाई देताहै। जिससे साहित्य में विभिन्न परिवेश और परिस्थिति उत्पन्नहोती हैं। जिसमे एक वर्ग अशिक्षित तथा दूसरा शिक्षित तथा संपनवर्ग होता हैं और जब ऐसी विभिन्नता साहित्य में होती हैं तबभाषाई स्तर पर भी विभिन्नता होती हैं। क्योंकि एक शिक्षित वर्गकी भाषा तथा संप्रेषण करने का ढंग अलग होता है। औरअशिक्षित वर्ग की भाषा और संप्रेषण व्यवस्था का ढंग अलगहोता हैं इस स्थिति में संवाद में सदैव दो भाषाओं के स्तर पर कोड मिश्रण की स्थिति उत्पन्न होती रहती हैं। जबसमाज द्विभाषी या बहुभाषी होता है तब वहाँ साहित्य भीद्विभाषी या बहुभाषी हो जाता हैं क्योंकि द्विभाषी समाज कामनोवैज्ञानिक स्तर या स्थिति भी द्विभाषी या बहुभाषी हो जातीहैं जिससे संप्रेषण में कोड़ा मिश्रण की स्थिति देखनेको मिलती हैंइस प्रकार कोड मिश्रण कीस्थिति साहित्य ,समाज और मनोविज्ञान तीनों के द्वारा उत्पन्नहोता है।

4.2 कथा साहित्य में सामाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान अपनी प्रकृति में वैज्ञानिक होता है। विज्ञान की अपनी कुछ विशेषताएँ होती है कुछ मापदंड होते हाँ जिनके आधार पर किसी विषय को विज्ञान की संज्ञा दी जाती है। मनोविज्ञान भी विज्ञान की श्रेणी में आता है क्योंकि उसमे मन से जुड़े तथ्यों का अध्ययन किया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान में जीवन के सामाजिक पक्षों से सम्बंधित अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया जाता है। राबर्ट ए.बैरन तथा जॉन बायर्न कहते हैं कि " समाज मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो सामाजिक परिस्थितियों में मनुष्य के व्यवहार और विचार के स्वरुप और कारणों का अध्ययन करता है। "

समाज, मनोविज्ञान का संबंध साहित्य से भी उतना ही गहरा है जितना अन्य शास्त्रों के साथ। इसलिए इनके संबंध पर थोडी चर्चा जरुरी है।

4.3 शोध हेतु चयनित कहानियों में कोड मिश्रण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य

कहानी का नाम	**पात्र**	**परिवेश**	**संस्कृति**
अनुगूँज	राहुल,मुनिया	शहरी परिवेश	भारतीय संस्कृति (हिन्दू)
बेलपत्र	फातिमा, ओम, शन्नो चची	शहरी परिवेश	भारतीय संस्कृति (हिन्दू-मुस्लिम)
कसक	नायिका, शब्बीर	शहरी परिवेश	भारतीय संस्कृति
पिलाकी माने फय	सरस्वती, राजू, बंसल साहब	मध्यवर्गीय परिवेश	भारतीय संस्कृति
आजकल	नायक	मध्यवर्गीय परिवेश	भारतीय संस्कृति (हिन्दू-मुस्लिम)
मार्च माँ और सकुरा	माँ,लड़का	शहरी परिवेश (जापान)	भारतीय संस्कृति
दरार	कल्पेश ,शाजी	मध्यवर्गीय परिवेश	भारतीय संस्कृति
चकरघिन्नी	लेखिका ,	शहरी परिवेश	भारतीय संस्कृति

4.4 शोध हेतु चयनित कहानियों के विषयवस्तु का मनोवैज्ञानिक पक्ष :-

'अनुगूँज' कहानी में मोवैज्ञानिक पक्ष :-

'अनुगूँज'कहानी गीतांजलि श्री के द्वारा रचित है यह कहानी अपनी भाषायी तरलता के साथ दाम्पत्य जीवन में स्त्री मन की कामनाओं और उसकी घुटन को कई आयामों में खोलती है। एक तरफ दूध वाले के

सुडौल देह के प्रति उसका आकर्षण है तो दूसरी तरफ पति की व्यस्तता के बीच उसकी अपनी घुटन की कहानी । कथावस्तु की दृष्टि से देखा जाये तो यहाँ पारंपरिक अर्थो में कोई कहानी नहीं है ,लेकिन भाव,भाषा का इस कहानी में एक ऐसा तारतम्य है जो दाम्पत्य जीवन के अन्तरंग यथार्थ को उजागर करता है। अपने मनोभावोंतथा घुटन को व्यक्त करने के लिए कहानी के पत्रों ने कोड मिश्रण का सहारा लिया है। उसे अपनी पति के बाँहों में सुरक्षा नही सिक्योरटी का एहसास होता है। व्यक्ति जिस परिवेश में रहता है उसी की भाषा में अभिव्यक्ति भी करता है। मुनिया और राहुल दोनों शिक्षित हैं। अतः उनके भाषा व्यवहार में अंग्रेजी के कोडों का मिश्रण सामान्य बात है।

'अनुगूँज' कहानी में आए कोड मिश्रण :-

'सिक्योरिटी' , "ओके बाय माई ओन", 'एप्लीकेशन फॉर्म' 'सिटिंग रूम और गेस्ट रूम' ,'आर्किटेक्ट', 'शॉपिंग' , 'वॉलहैंगिंग्स', 'पोजिशन' , ' स्ट्रगल' , 'जॉगिंग,स्किपिंग,डायटिंग', 'वुमैन एंड होम', ' एक्सटैंशन' , 'स्पेस से ऑर्बिट' , 'सी ग्रीन , ऑलिव ग्रीन एमरेल्ड ग्रीन , पैरट ग्रीन' , 'रॉकिंग चेयर' , 'सेक्सी', 'कन्फैकशनरी'।

'बेलपत्र' कहानी का मनोवैज्ञानिक पक्ष :-

'बेलपत्र' पारिवारिक जीवन में साम्प्रदायिक अंतरलय की कहानी है। इस कहानी में एक प्रगतिशील मुश्लिम स्त्री एक हिन्दू युवक से प्रेम विवाह करती है तो कैसे समाज में व्याप्त साम्प्रदायिकता के कांटे उसे जगह जगह लहुलुहान करते चलते है इसका बड़ी मार्मिकता से चित्रण किया गया है। बेलपत्र में भाषा और जीवन का अंतर्द्वंद्व एकसार हो गया है। फातिमा एक पढ़ी लिखी स्त्री है शुरु से कॉलेज के परिवेश में घुली मिली है और अपने कॉलेज के दोस्त राहुल से प्रेम विवाह करती है। इस कहानी में कोड मिश्रण आदतन भी है और कुछ शब्दों के लिए हिंदी में सटीक शदावली भी नही है जैसे – 'एक फ़्लाइंग किस दे कर वह निकल गया।' अतः इस कहानी में हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्म क घर में रहते हैं। वे आधुनिक परिवेश में जी रहे हैं अतः उनके बातचीत में कोड मिश्रण हो जाना आम बात है।

बेलपत्र में कोड मिश्रण :- 'रिलैक्स' , 'कैबिनेट' , 'ऑफ़िस' , 'सिम्बल ऑफ़ विक्टरी' , 'डू यू

अंडरस्टैंड' , ' इंटीमेट'।

'कसक'कहानी का मनोवैज्ञानिक पक्ष :-

'कसक' कहानी में एक ऐसे पात्र का चित्रण किया गया है जो जीवन को भरपूर जीती है और अंत में तेरहवीं मंजिल से कूद क्र आत्महत्या कर लेती है। मृत्यु उसके लिए जीवन का ही हिस्सा है। वह जीवन के बीचोबीच जीती है और उसी सहजता के साथ मृत्यु के बीचोबीच चली जाती है बिना किसी कसक के बिना आँसू बहाए। यहाँ नायिका अपनी जिंदगी के विंदास पलों को अपनी सहज भाषा में बताने के लिए उसने अंग्रेजी के कोडों का सहारा लिया है। नायिका जीवन को खुले रूप से देखती है बंदिशे उसे पसंद नहीं इसी खुलेपन से उसने मौत को भी चुना।

कसक में कोड मिश्रण - काम्प्लेक्स ,एश परोस्तो ,आइस स्केटिंग ,ट्रैक , "क्या फर्क पड़ता है हाउ डज इट मैटर" , 'सिंगल रूम' , 'रीचिंग सिक्सटिंथ रिसीव स्टेशन' , 'जजमेंट' , 'पॉलिटिक्स' , 'जस्ट व्हाट डू यू मीन' , 'पैटंज' , ' एवरी एक्ट इज़ अ पॉलिटिकल एक्ट' , 'सच ब्लडी इंडीफरैंस मैंडस मी' , ' लाइफ साइज़ पिक्चर पोस्टकार्ड' , ' नेचर्स कॉल' , 'टाइमलैस'

'पिलाकी माने फय'का मनोवैज्ञानिक पक्ष :- यह कहानी मध्यवर्गीय जीवन के दुखों की नहीं बल्कि उन दुखों से उपजे हास्य की कथा है। यहाँ भाषा का खिलवाड़पन और हास्य देखने लायक है साथ ही इसमें 'वैराग्य' मृत्युबोध और मृत्यु से पैदा हुई रिक्ति को भाषा में भरने का प्रयास किया गया है। इस कहानी में मध्यवर्गीय परिवार अपने को उच्च मध्यवर्ग की श्रेणी में रखने के लिए ,सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए अंग्रेजी के कोडों का प्रयोग करता है।

'पिलाकीमाने फय' में कोड मिश्रण :- 'अपॉयंटमेंट' , 'एनगेज्ड' , 'रिस्क' , 'डायलॉगी' , ' फॉग-फॉग,वैरी फॉग , इन माई हार्ट इज़ सो वैरी नाईट' , 'आइडिया डज़ नॉट अकर इन वैक्यूम' , 'स्मैशिंग ईगो' , 'ड्रेनेज सिस्टम' , 'बाई गॉड' , 'एक्सपायरी डेट', 'रिजेक्ट'

'आजकल' का मनोवैज्ञानिक पक्ष :- यह कहानी साम्प्रदायिक उन्माद के अंतरलय की एक अद्भुत कहानी है। इसे गुजरात दंगों से जोड़कर से यह चीज और भी स्पष्ट हो जाती है। एक हिन्दू घर के बरामदे

में इस तरह बैठा है कि वह हिन्दू है ,निःशंक बैठ सकता है। दरअसल वह घबराया हुआ है। घर उसके मुसलमान मित्र का है जिसे दंगे के माहौल में अचानक भागना पड़ा है। भावों के आवेश में वह शर्म,क्रोध, ग्लानी आदि की परिस्थिति में अपने को सहज महसूस करने के लिए वह कोड मिश्रण करता है। साथ ही इस कहानी का परिवेश साम्प्रदायिक उन्माद का परिवेश है जिसमे प्रशासन आदि से सम्बंधित शब्दावली के कोडों का भी प्रयोग किया गया है।

'**आजकल' में कोड मिश्रण** :- 'डिफेंसज़' , 'लैक्रिमोस ग्लैंड' , 'यूनिवर्सिटी' , 'सिक्योरटी' , 'मेंटेनेंस' , 'कम्पाउंड , लॉन' , 'साइड की बाउंड्री वॉल' , 'बेडसाइड लैम्प' , 'हियरिंग एड'

'मार्च, माँ और साकुरा' कहानी का मनोवैज्ञानिक पक्ष :- यह कहानी समकालीन हिंदी की एक अद्भुत और काव्यात्मक कहानी है। एक स्त्री के स्त्रीत्व की पूर्णता की कहानी है। माँ जो एक डरी हुई स्त्री है,एक जापानी युवक और प्रकृति के सहचरी में जीना सीखती है। वहाँ जाते ही जैसे उसका कायांतरण हो जाता है। सामान्य मध्यवर्गीय जीवन की जंजीरों में जकड़ी एक स्त्री जापान आते ही अचानक मानो चिड़िया बन जाती है। मार्च में साकुरा के फूल खिलते हैं और माँ उन्हें देखने जाती है। कहानी बताती है कि स्त्री का कायांतर समकालीन चालू स्त्री विमर्श से नहीं बल्कि उसके अंर्तमन के कायाकल्प से होता है जिसकी कोई उम्र नहीं होती। 'माँ ने मछली की दुकानवाले लड़के से टूटी-फूटी अंग्रेजी में बात करनी शुरु कर दी। जापानी लड़का टूटी-फूटी अंग्रेजी में माँ से पूछे कि मछली कैसे बनाओगी और हिन्दुस्तानी माँ टूटी-फूटी अंग्रजी में बताए कि पहले इसका आचार डालूंगी फिर तुम्हे दूंगी।दोनों ऐसी अंग्रेजी बोल रहे है की अंग्रेजी को भी मिर्ची लग जाये।" माँ उस जापानी पुरुष के प्रति आकर्षित है। इस कहानी में माँ और जापानी लड़का दोनों सम्प्रेषण के लिए एक इसे कोड को चुनते है जो दोनों को थोड़ी थोड़ी आती है। यहाँ परिस्थिति की मांग है कोड मिश्रण।

'मार्च,माँ और साकुरा' में कोड मिश्रण :- 'अराइवल लाउंज' , 'सुपर मार्किट' , 'यू लव इनदोफूड', 'एक्जिट' , 'टेलिविजन ब्रॉडकास्टिंग'

'दरार' कहानी का मनोवैज्ञानिक पक्ष :- कहानी का सूत्र वाक्य है कि " कोई एक को छोड़कर दूसर को नहीं चुनता ,बस जीवन के परिचितपन से ऊब कर नए माहौल को चुनता है। " कल्पेश जो अपनी

पत्नी से अलग होकर लगभग एक कीड़ा बन चुका है,बरसात की एक रात अपने घर की छत में आई दरार के चलते अपने बैरे के गैराज में पहुँच जाता है जहाँ बिस्तर पर बेतरतीबी से पड़ा बैरे की पत्नी की चोली उसे एक अजीब तरलता से भर देती है। पहले वह चुपके से उस चोली को छूता है और फिर वैरे की सुलगाई बीड़ी पीता है और स्टोव पर उसकी पत्नी के हाथ से बनी हुई चाय। उसे 'उस गुनगुनी तपिश से तर कोठारी में , टीन की छत पर गुनगुनाती बरसात के नीचे बीड़ी और चाय पीना सुहा रहा था। टीन की छत थी , दरार नहीं पड़ सकती। चूने लगे, इसका कोई डर नहीं। कल्पेश अकेला और अत्याधुनिक पुरुष है जो अपने स्वभाव के अनुसार कोड मिश्रण करता है।वह गली भी अंग्रेजी में देता है –'ब्लडी मैरी'। इस कहानी में अपनी कुंठा और अकेलेपन की अभिव्यक्ति के लिए पात्र अंग्रेजी से शब्दों का सहारा लेता है।

'दरार' में कोड मिश्रण :- 'शार्टकट' , ' ब्लडी मैरी' , 'डाईवोर्स पेपर' , 'मैटाडोर' , 'ड्रिंक कैबिनेट' , 'स्ट्रीट लाईट' , 'थैंक्यू, सॉरी'

'चकरघिन्नी' का मनोवैज्ञानिक पक्ष :- 'चकरघिन्नी' मॉर्निंग वाक पर निकली एक लेखिका की वायरल अनुभूतियों की कहानी है। यूँ कहानी जैसा इसमें कुछ भी नहीं है बस चालू नारीवादी मुहावरों से अलग आधुनिकता के घटाटोप में एक नारी के किलसते अंतर्मन के कुछ अनोखे एहसास है वह ज़माने से बेपरवाह बेधड़क मॉर्निंग वाक पर निकलती है लेकिन लोगो की निगाहें उसे अजूबा बना देती हैं या उसे ऐसा लगता है कि वह दूर के घेरे से धीरे-धीरे वह पास के घेरे में चलने लगती है और अंत में तो उसे अपनी ही हाउजिंग सोसायटी में उसकी मॉर्निंग वाक की यह दास्तान एक दिलचस्प रूपक बन जाती है। औरत के दर्द और शिकवों की। कुल मिलाकर स्ट्रीम ऑफ़ कांशसनेस शैली में लिखी यह कहानी अपनी ही वजूद में चकरघिन्नी बनी स्त्री का सर्वकालिक आख्यान है। लेखिका एक मॉडर्न महिला है जिसे आस-पास के लोगों के कुछ कहने से कोई फर्क नहीं पड़ता। वह अपने मोडर्न व्यक्तित्व को बनाये रखने के लिए कोड मिश्रण करती है। वह लेखिका अपने आगे वाले व्यक्ति के व्यक्तिव के अनुसार कोड का प्रयोग करती है जैसे 'गुड मोर्निंग डॉ.साहब' , 'नमस्कार बहन जी'।

'चकरघिन्नी'में कोड मिश्रण :- 'राउंड पे राउंड' , 'प्राइवेट आत्मा ' , 'मॉर्निंग वॉक' , 'टेबल फैन' ,

‘बत्ती ऑफ’, ‘हार्ट अटैक’, ‘सोसायटी’, ‘ब्रा स्ट्रैप’, ‘गुड मॉर्निंग डॉक्टर साहब’ , ‘लेफ्ट से राइट’ , ‘बाउंडरी’ , ‘वॉकर’ , ‘जॉगिंग’ , ‘मेडिटेशन’, ‘एनिमेशन फिल्म’ओ माई गॉड’ , ‘ट्राई ऑन’

समग्रतः देखा जाता है कि कोड मिश्रण के पीछे कोई न कोई परिप्रेक्ष्य आवश्य ओता है । चयनित कहानियों में कुछ ऐसे कोडों का प्रयोग भी हुआ है जिनके लिए हिंदी में कोई संकल्पना ही नहीं है जैसे ‘फ़्लाइंग किस’ । ऐसे मिश्रण भी देखने को मिलते हैं जिनका प्रयोग हिंदी में असहज होता है जैसे ‘सेक्सी’आदि।

उपसंहार

हिन्दी भाषा समुदाय का कोड-मैट्रिक्स स्थानीय ग्रामीण बोली,क्षेत्रीय बोली,मानक हिंदी और अंग्रेजी से निर्मित है इनमे परस्पर कोड मिश्रण की प्रक्रिया चलती रहती है। हिन्दी में कोड मिश्रण की व्यापक स्थिति के कारण ही 'शुद्ध हिंदी''को अलग रख कर देखा जाता है और कोड मिश्रण से उत्पन्न हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी मिश्रित हिंदी और अरबी-फ़ारसी मिश्रित हिंदी को संदर्भ और स्थिति के वैशिष्ट्य के अनुरूप भाषा व्यवहार के भाषा रूपों के अंतर्गत रखा जाता है। हिंदी-अंग्रेजी कोड मिश्रण का हिंदी साहित्य में प्रतिफलन स्पष्ट दिखाई देने लगा है,जो इनके प्रचलन का प्रमाण है। आधुनिक हिंदी साहित्य भी जब महानगरीय कथानकों की ओर मुड़ा और उसने मध्यवर्गीय जीवन के माध्यम से आधुनिकता-बोध को अपनी विषय-वस्तु के रूप में प्रमुखता दी तब कथा साहित्य में हिंदी-अंग्रेजी कोड मिश्रण से बंधी हिंदी भाषा का व्यापक प्रयोग लेखन के माध्यम से भी स्थिर होने लगा है।

कोड मिश्रण की प्रक्रिया तब होती है जब दो भाषाओं के कुछ तत्व या इकाई एक साथ संप्रेषण व्यवस्था में , प्रयोग में,या लेखन व्यवस्था के प्रयोग में लायी जाती है और उनका प्रयोग एक वाक् प्रकार्य के रूप में उस द्विभाषिक द्वारा किया जाता है। जो दोनों ही भाषाओं में प्रयोग की क्षमता रखता हो तब कोड मिश्रण को समझा जा सकता है।

यह प्रक्रिया अपने भीतर शब्दों का अंतरण , उपवाक्यों का अंतरण समेटे रहती है जैसे:- अंग्रेजी की सामान्य इकाईयों का हिंदी में अंतरण या दो स्वतंत्र वाक्यों का उपवाक्यो का क्रमबद्ध प्रयोग देखा जा सकता है । इस मिश्रित कोड के प्रयोग के पीछे कई कारण होते है जैसे-मनौवैज्ञानिक,सामाजिक, भाषावैज्ञानिक आदि। जो वक्ता को इसका प्रयोग करने के लिए प्रेरित करते है। सामाजिक तत्व तथा सामाजिक नियम भाषा प्रयोग के नियमो को बताते है। सामाजिक नियमों के भीतर भाषा का वह ज्ञान

होता है जिसके द्वारा भाषा प्रयोक्ता अर्थ संप्रेषित करता है। भाषा प्रयोक्ता जब किसी विशेष कोड का प्रयोग करता है तब उसके मस्तिष्क में श्रोता तथा परिस्थिति दोनों विद्यमान रहते हैं इसलिए यह कह सकते है कि भाषा प्रयोक्ता इन कोडों के प्रयोग के समय इस बात का अनुमान कर लेता है कि दूसरे श्रोता (सहभागी)की क्या स्थिति है और भाषा प्रयोग की परिस्थिति कैसी है। इस प्रकार वक्ता श्रोता आपस में संदेश संवहन कर पाते है यह प्रक्रिया दुहरी है। एक तरफ भाषा चयन पर प्रकाश डाला जाता है और दूसरी तरफ भाषा माध्यम से अपने विचारो को अभिव्यक्त किया जाता है।

कोड मिश्रण एक ऐसा भाषायी रूप है जिससे भाषा की गतिशीलता एवं समृद्धि का परिचय मिलता है। सामाजिक सूचना में कोड मिश्रण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह कोड मिश्रण प्रक्रिया न सिर्फ शिक्षित एवं अर्द्धशिक्षित, बल्कि अशिक्षितों द्वारा भी अपनायी जाती है। कोड मिश्रण किसी द्विभाषी या बहुभाषी समाज में लोगों की बातचीत का अभिन्न अंग है, जिसमें वक्ता एक भाषा के स्थान पर दूसरी भाषा का प्रयोग करता है। भारतीय संदर्भ में अंग्रेजी सहभाषा होने के कारण सभी भारतीय भाषाओं के साथ इसका कोड मिश्रण देखा जा सकता है। कोड मिश्रण दो भाषाओं के संपर्क से उत्पन्न होता है लेकिन इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वक्ता एक–दूसर की भाषा न समझते हों। इसमें वक्ता को दोनों भाषाओं का ज्ञान होता है। वह इसका प्रयोग भिन्न–भिन्न तरह कर सकता है। कोड परिवर्तन व कोड मिश्रण से किसी भाषा के सरलतम रूप का जन्म होता है। यह भाषा–शैली को सामाजिक रूप से सरलीकृत करने की प्रक्रिया है।

उपयोगिता

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की उपयोगिता को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है-

1. कोड तथा कोड मिश्रण को समझने में।

2. कोड मिश्रण, कोड परिवर्तन से किस स्तर पर भिन्न है ये जानने में सहायक।

3. कोड मिश्रण के कारण एवं सामाजिक मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य समझने में सहायक होगा।

4. कुछ चयनित कहानियों के संदर्भ में कोड मिश्रण समझने में सहायक।

शोध सीमा :- प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में कोड मिश्रण के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य को देखने का प्रयास किया गया है कहानियों के संदर्भ में। अतः यह केवल कोड मिश्रण के सामाजिक-मनोवैज्ञानिक कारणों तक ही सिमित है किसी क्षेत्र विशेष या समुदाय विशेष पर आधारित नहीं है।

संदर्भ-ग्रन्थ-सूची

- नारंग, वैश्ना ; संप्रेषणपरक हिंदी भाषा शिक्षण (सामान्य सिद्धांत और कुछ व्यवहारिक पक्ष); प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली ; प्रथम संस्करण 1996
- मिश्र, विद्यानिवास ; संप्रेषण और संप्रेषणपरक व्याकरण ; केन्द्रीय हिंदी संस्थान , आगरा ; प्रथम संस्करण -1988
- श्रीवास्तव , रवीन्द्रनाथ ; हिंदी भाषा का समाजशास्त्र ; राधाकृष्ण प्रकाशन , नई दिल्ली ; प्रथम संस्करण 1994
- सिंह , प्रो. दिलीप ; भाषा का संसार(आधुनिक भाषा विज्ञान की सुगम भूमिका) ; वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली ; प्रथम संस्करण 2008
- सिंह ,डॉ. भरत ; भाषा और समाज (हिंदी भाषा के समाजशास्त्रीय अध्ययन के संदर्भ में); आलेख प्रकाशन , दिल्ली ; प्रथम संस्करण 2002
- श्रीवास्तव , रवीन्द्रनाथ , संपादक – बीना श्रीवास्तव ; भाषा विज्ञान : सैध्दांतिक चिंतन ; राधाकृष्ण प्रकाशन , दिल्ली प्रथम संस्करण 1997
- संपा. वर्मा , डॉ.शिवेंद्र किशोर ,सिंह ,डॉ. दिलीप ;भाषा –अध्ययन :विविध पक्ष (विख्यात भाषाविज्ञानी प्रो.रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव-स्मृति-ग्रन्थ);आलेख प्रकाशन , दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
- सिंह ,राजेन्द्रप्रसाद ; भाषा का समाजशास्त्र ; राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2004

ENGLISH BOOKS

★Agnihotri, R.k; Khanna, A.l ; Sachdev, I. ; (Edited); Social Psychologi Cal Perspec tives On Second Language Learning ; Sage Publications, New Delhi ; 1998

★Daswani, C.j. (Edited) ; Language Education In Multilingual India ; Unesco ; 2001

★Eastman, Carol (Edited) ; Code Switching ; Library Of Congress Cataloging n In Publication Data ; 1992

★Edwards. A.d. ; Language In Culture And Class (The Sociology Of Language And Education) ; Heinemann Educational Books Ltd. London, First Published 1976

★Ferguson, Charles A. ; (Edited By Huebner, Thom ; Oxford Studies In socSociolinguistics ; Sociolinguistic Perspectives ; Papers On Language In ocSociety, 1959-1994 ; Oxford University Press ; 198 Madison Avenue, New York.

★Gugupta, R.s. ; Aggarwal, Kailashs. (Editors), Studies In Indian sSosociolinguistics; Creative Books, New Delhi ; 1998

★Hudson, R.a. ; Sociolinguistics ; Second Edition ; Cambridge University Rpress; 1996

★Milroy, Lesley And Muysken, Pieter (Edited) ; One Speaker, Two Language, Crossdisciplinary Perspectives On Code Switching ; Cambridge University Press ; First Published In 1995

Websites

http://en.wikipedia.org/wiki/code-mixing)

http://www.sahityakunj.net/LEKHAK/R/Rishabhdeo/Smaj_bhasha_vigyan_pustak charcha.htm

http://en.wikipedia.org/wiki/code .

http://en..wikipedia.org/wiki/code_mixing .

http://language in india. com/dec 2001/ Jcsharma2. Html.

http://www.thefreedictionary.com/Pidgin

http://www.answers.com/topic/Pidgin

aixl.uottwa.ca/ sociolx/cs.pdf